किशोर उपन्यास

जादू का दीपक



अरब की प्रसिद्ध लोक-कथाएं|
'स्टोरीज़ फ्रॉम अरेबियन नाइट्स' का सरल रूपांतर

STORIES FROM THE ARABIAN NIGHTS

का सरल हिन्दी रूपान्तर

रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

मूल्य पन्द्रह रुपये मात्र

संस्करण : 1994

JADU KA DEEPAK

जादू का दीपक





जादू का दीपक

बगदाद का जौहरी

मिस्र के काहिरा नामक शहर में एक सौदागर रहता था उसका नाम था हसन। वह बहुत अमीर था। रुपये-पैसे, हीरे-जवाहरात तो उसके यहां ढेरों थे। ज़मीन-जायदाद की भी उसे कमी नहीं थी। अपने ज़माने में वह सबसे बड़ा अमीर माना जाता था।

सौदागर का एक लड़का था। वह बड़ा सुन्दर था। जब वह सड़क से निकलता था तो लोग उसे देखते रह जाते थे। उसका नाम था अली। घर में उस्ताद रखकर अली को सब विषयों की शिक्षा दी गई। एक मौलवी साहब उसे कुरान पढ़ाते थे, तो दूसरे उसे हिसाब-किताब की शिक्षा देते थे।

कुछ ही दिनों में वह पढ़-लिखकर तैयार हो गया और अपने पिता के साथ तिजारत में हाथ बंटाने लगा। हसन ने उसे दूर-दूर व्यापार के लिए भेजा और कुछ ही दिनों में बहुत अच्छा सौदागर बना दिया। कुछ दिनों बाद हसन बीमार पड़ा। उसकी बीमारी बढ़ती ही गई। यहां तक कि उसे लगा कि अब बचना मुश्किल है।

उसने अपने लड़के को पास बुलाया और कहा, "बेटा, यह दुनिया, जिसमें हम लोग रहते हैं, एक न एक दिन खत्म हो जाएगी। लेकिन वह दुनिया, जहां हम मरने के बाद जाते हैं और जहां खुदा का राज है, कभी खत्म नहीं होती। मैं अब उसी

दुनिया को जाने की तैयारी कर रहा हूं। मेरी मौत करीब है। चलते-चलते मैं तुम्हें दो-एक बातें कहना चाहता हूं। अगर तुम मेरी सीख के मुताबिक चलोगे तो जिन्दगी-भर आराम से रहोगे और तुम्हें किसी बात की तकलीफ नहीं होगी। लेकिन अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो बाद में पछताओगे और तुम्हें बहुत दुख उठाना पड़ेगा।"

लड़का बोला, "नहीं अब्बाजान, भला यह कैसे हो सकता है कि मैं आपकी बात न मानूं! आप जो कुछ कहेंगे मेरे भले के लिए ही तो कहेंगे। मैं आपकी बात को खूब गौर से सुनूंगा और हमेशा याद रखूंगा।"

"हां बेटा, मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। सुनो, मैं तुम्हारे लिए इतनी बड़ी जायदाद छोड़कर जा रहा हूं। इतनी धन-दौलत, सोना-चांदी और हीरे-जवाहरात, यह सब तुम्हारा हो जाएगा। अगर तुम रोज़ चार मोहरें खर्च करो, तो यह धन कभी खत्म नहीं हो सकता।

"लेकिन बेटा, तुम खुदा को कभी मत भूलना। गरीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करना। सिर्फ ऐसे ही लोगों का साथ करना जो अच्छे और भले हों और समझदार हों। कभी लालच मत करना और बुरी आदतों से बचना। अपने नौकर-चाकर, बच्चे और बीवी पर दया रखना।"

लड़के ने सिर झुकाकर बड़े ध्यान से अपने पिता की सीख सुनी और कहा, "अब्बाजान, यकीन रखिए, मैं आपकी बात को कभी नहीं भूलूंगा।"

यह सुनकर बूढ़े हसन को बड़ी खुशी हुई। उसने प्यार से अपने बच्चे का सिर चूम लिया और फिर थोड़ी देर में उसकी सांस उखड़ गई। देखते-देखते वह चल बसा।

अब अली पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। सौदागर के मरने पर उसके दोस्त और जान-पहचान के लोग मातमपुर्सी के लिए आने लगे। घर में कोहराम मच गया। रिश्तेदारों ने अली

के पिता को कब्रिस्तान में ले जाकर दफन कर दिया। इसके बाद करीब चालीस दिन तक अली अपने अब्बाजान की याद में घर से बाहर नहीं निकला।

अन्त में एक दिन उसके दोस्तों ने उसे आ घेरा। कहा, "अली, इस तरह कब तक गम मनाओगे ? तुम्हारा सारा रोज़गार और तिजारत चौपट हुई जा रही है। हम लोग तुमसे मिले बिना बड़ी मनहूसी से दिन काट रहे हैं।"

दूसरे दोस्तों ने उससे कहा, "चलो, अब बहुत हो गया, बाप तो सभी के मरते हैं। ऐसा भी क्या गम ! अपना घोड़ा निकालो, चलो, कहीं घूम-फिर आएं, या आओ कुछ खाया-पिया जाए। हम तुम्हारा गम दूर करना चाहते है।" अली ने उनकी बात मान ली। वह उनके साथ घोड़े पर बैठकर घूमने निकल पड़ा। दिन-भर वह उनके साथ घूमता रहा और हंसी-मज़ाक करता रहा। सबने मिलकर खूब खाया और सैर-सपाटा किया। अन्त में शाम को सब अपने-अपने घर लौट गए। अली भी लौट आया।

लेकिन दूसरे दिन वे लोग फिर आ धमके और अली को अपने साथ चलने को कहने लगे। अली ने उनकी बात मान ली। वह फिर उनके साथ चल पड़ा। इस दिन भी उन्होंने खूब अच्छा खाना खाया और खूब शराब पी। उसके दोस्तों ने उससे कहा, "शराब से आदमी अपना दुख भूल जाता है, लो पियो !"

अली दिन-भर उन लोगों के साथ खूब शराब पीता रहा। जब वह घर पहुंचा तो उसकी बीवी यह देखकर चौंकी कि उसके मुंह से शराब की बदबू आ रही थी। उसे बड़ा दुख हुआ। उसने सिसकते हुए कहा, "हाय अल्लाह, तुम तो उन सारी बातों को भूल गए, जिनकी सीख तुम्हारे अब्बाजान मरते वक्त दे गए थे।"

अली बोला, "क्यों इसमें क्या हुआ ? ये सब तो मेरे दोस्त हैं। ये सब अच्छे आदमी हैं। सभी सौदागरों के लड़के हैं, उन सौदागरों के जो अब्बाजान के दोस्त थे।"

इस तरह उसने अपनी बीवी की एक न सुनी। वह अपने

दोस्तों को छोड़ने के लिए तैयार न हुआ। दिन-भर वह उनके साथ इधर-उधर घूमता था, बाज़ार में खाता था और अक्सर शराब पीता था। उसके दोस्त बड़े चालाक थे, बहुत पैसा खर्च करा देते थे।

आखिर महीने के अन्त में उसने दोस्तों पर बहुत-सा रुपया बराबर कर डाला। जब उसके खज़ांची ने उसको हिसाब बताया तो उसने यह कहकर टाल दिया, "तुम फिक्र न करो, मेरे पास बहुत दौलत है, मैंने जितना महीने-भर में खर्च किया है, इतना अगर रोज़ खर्च करूं तो भी मेरी जायदाद खत्म नहीं हो सकती।"

और वह ज़्यादा से ज़्यादा खर्च करने लगा। इसी तरह तीन साल बीत गए। उसकी बीवी उसे रोकने की बहुत कोशिश करती थी। लेकिन उसने उसकी एक न सुनी। उसने अपने अब्बा की सीखों का भी कोई ख्याल नहीं किया। धीरे-धीरे नकद रुपया खत्म होने लगा तो उसने पुराने जवाहरात बेचने शुरू किए। यहां तक कि दोस्तों के चक्कर में धीरे-धीरे उसके सारे मकान और उसकी सारी ज़मीन-जायदाद भी बिक गई। अब उसके पास कुछ नहीं बचा।

अंत में एक दिन उसकी बीवी ने उससे कहा, "देखो, मैं तुम्हें पहले ही कहती थी कि इस तरह तुम अपनी सारी दौलत से हाथ धो बैठोगे। लेकिन तुमने मेरी एक न सुनी। तुम्हारे दोस्तों ने तुम्हारा सब कुछ लुटवा दिया। अब तो हमारे लिए खाना मिलना भी मुश्किल हो जाएगा। जाओ, अपने दोस्तों के पास जाओ। वे बहुत अमीर हैं और सौदागरों के लड़के हैं। मुमकिन है, वे पुरानी दोस्ती का ख्याल करके तुम्हारी कुछ मदद कर दें। उनसे कुछ पैसा मांग लाओ, वरना कल हम सबको भूखा रहना पड़ेगा।"

अली अपने दोस्तों के पास गया। लेकिन भला अब वे उसे क्यों पहचानने लगे! किसी ने उसकी मदद नहीं की। सबने उसकी ओर से मुंह फेर लिया। किसी ने उसे एक पैसा तक नहीं

दिया। अब जाकर अली की आंखें खुलीं। अन्त में मजबूर होकर वह खाली हाथ घर लौट आया। घर आकर उसने अपनी बीवी से कहा, "मैं नहीं जानता था कि मेरे दोस्त मौके पर मुझे इस तरह धोखा देंगे। खैर, कोई बात नहीं। यहां तो पैसा मिलना मुश्किल है, मैं कहीं बाहर सफर पर जाऊंगा। मुमकिन है, खुदा मेरी मदद करे और मेरा काम चल जाए।"

उसकी बीवी और बच्चों ने उसे रोते-रोते विदा किया। अली का मन भी भर आया। किसी तरह दिल कड़ा करके वह निकल पड़ा। वह सीधा बन्दरगाह की ओर गया। वहां से एक बड़ी नाव नील नदी के मुहाने पर बसे दामिता शहर की ओर जा रही थी। वहां उसे एक आदमी मिला, जो उसके पिता का मित्र था। उसने अली से पूछा, "अली, तुम कहां जा रहे हो ?"

अली बोला, "दामिता जा रहा हूं। वहां मेरे कुछ दोस्त रहते हैं। उन्हींसे कुछ मदद मांगूंगा, लेकिन मेरे पास इस समय एक भी पैसा नहीं है।" उस आदमी को अली पर दया आ गई। उसने उसे कुछ रुपये दिए और खाना खिलाया और फिर जहाज़ पर चढ़ाकर उसे विदा कर दिया।

दामिता पहुंचने पर अली जब जहाज़ से उतरा तो उसकी समझ में यह न आया कि वह कहां जाए और क्या करे। वह यों ही मारा-मारा सड़कों पर घूमने लगा। अचानक एक सौदागर की नज़र उस पर पड़ी। उसकी हालत देखकर सौदागर को उस पर दया आई। वह उसे अपने घर ले गया।

कुछ दिनों तक वह उसी सौदागर का मेहमान रहा। लेकिन ऐसे कितने दिन चल सकता था। अन्त में एक दिन वह उसके यहां से चल पड़ा। किसी ने उसे बताया कि बहुत जल्द ही एक जहाज़ सीरिया जाने वाला है। अली ने तुरन्त ही सीरिया जाने का निश्चय किया। उस सौदागर ने और दो-एक दूसरे रहमदिल लोगों ने उसकी मदद कर दी और खाना तथा थोड़ा पैसा दे दिया। अली जहाज़ में बैठकर सीरिया के किनारे पहुंच गया।

वहां से दमिश्क पहुंचा। दमिश्क से कुछ दिनों बाद एक कारवां बगदाद जाने वाला था। अली भी उस कारवां में शरीक हो गया।

असल में एक सौदागर भी उसी कारवां में बगदाद जा रहा था। उसे अली पर तरस आया और उसने उसे अपने साथ ले लिया। रास्ते में उसे अली ने सब कुछ बतला दिया। धीरे-धीरे कारवां बहुत दूर पहुंच गया। अब बगदाद पहुंचने में सिर्फ एक दिन की देरी थी।

लेकिन इसी बीच डाकुओं के गिरोह ने कारवां पर हमला कर दिया। डाकू सब कुछ लूट ले गए। लूट-पाट में उन्होंने बहुत लोगों को मार डाला। लेकिन अली किसी तरह बच निकला और गिरते-पड़ते बगदाद पहुंच गया। जब वह बगदाद के शाही दरवाज़े पर पहुंचा तो पहरेदार दरवाज़ा बन्द ही करने जा रहे थे। अली ने उनसे मिन्नत करते हुए कहा, "मुझे अन्दर आ जाने दो।"

पहरेदारों ने पूछा, "तुम कहां से आ रहे हो और कहां जाना चाहते हो?"

"मैं काहिरा से आ रहा हूं। एक काफिला लेकर तिजारत के लिए बगदाद आ रहा था। मेरे पास बहुत सारा सामान था। लेकिन बदकिस्मती से रास्ते में डाकुओं ने हमला कर दिया। किसी तरह जान बचाकर मैं यहां तक पहुंच पाया हूं।"

पहरेदारों ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया। उन्हें उस पर दया आ गई। वे बोले, "आओ, रात में तुम हमारे यहां ही ठहर जाओ। सवेरे तुम्हारा कुछ इन्तज़ाम कर देंगे।"

अली ने अपनी जेबें टटोलीं तो अचानक उसे सोने की एक मोहर मिल गई। यह मोहर उसे उसी सौदागर ने रास्ते में दी थी। उसने मोहर एक पहरेदार को देते हुए कहा "लो, इससे सब लोगों के लिए खाना खरीद लाओ।" उस सोने की मोहर से इतना खाना आया कि पहरेदारों ने खूब दावत उड़ाई। वे लोग बड़े खुश हुए। रात-भर उन्होंने उसे बड़े आराम से अपने यहां टिकाया।

सवेरे पहरेदार उसे अपने साथ लेकर बगदाद के एक बड़े अमीर के पास पहुंचे। अली ने उसे भी अपनी मुसीबत की कहानी सुनाई। अमीर ने उसको कहानी पर विश्वास कर लिया। उसे यह सुनकर बड़ा अफसोस हुआ कि अली का सारा माल डाकू लूट ले गए। उसने उसे पहनने के लिए अच्छे-अच्छे कपड़े दिए और फिर अपने एक गुलाम को बुलाकर कहा, "मसूद, आज से ये तुम्हारे मालिक हैं। इनको ले जाओ, और मेरे जो मकान खाली पड़े हैं, इन्हें दिखा दो। इनको जो मकान पसन्द आ जाए, उसकी चाबी इनको सौंप देना। वहीं ये रहेंगे।"

गुलाम अली को साथ लेकर चल पड़ा। दोनों एक सड़क पर पहुंचे। वहां तीन मकान पास-पास बने हुए थे। गुलाम ने मकानों की ओर इशारा करके कहा, "हजूर, ये मकान मेरे मालिक के हैं। आप इनमें से कोई एक चुन लीजिए। उसी की चाबी मैं आपको सौंप दूंगा।"

उन तीनों मकानों में बीच वाला मकान सबसे बड़ा था। अली ने पूछा, "क्या यह मकान तुम्हारे मालिक का ही है!"

"जी हां।"

"ज़रा इसे खोलो तो, देखें यह कैसा है?"

इस पर गुलाम घबराकर बोला, "नहीं हुज़ूर, यह मकान ठीक नहीं है; यह बड़ा खतरनाक मकान है। लोग इसको भुतहा घर कहते हैं। जो कोई रात में इसमें ठहरता है, वह सुबह मरा पाया जाता है। यहां तक कि लोग मरे हुए आदमी की लाश उठाने के लिए भी इसका दरवाज़ा नहीं खोलते। दूसरे मकान की छत से उतर जाते हैं ओर वहीं से लाश को निकालते हैं। कोई भी इसका दरवाज़ा खोलने की हिम्मत नहीं करता।"

अली ने कुछ देर तक सोचा और फिर गुलाम को हुक्म दिया, "मैं कहता हूं, इसका दरवाज़ा खोलो! तुम्हें मेरा हुक्म मानना चाहिए।"

अली ने अपने मन में सोचा कि ऐसी ज़िन्दगी से तो मर

जाना ही बेहतर है। अच्छा है रात में मैं यहीं रहूंगा और सुबह मर जाऊंगा, इस तरह सारी मुसीबतों से छुटकारा मिल जाएगा।

जब वह नहीं माना तो गुलाम ने ताला खोल दिया। अली ने अन्दर जाकर देखा, मकान बहुत ही खूबसूरत था। उसे पसन्द आ गया। वह बोला, "ठीक है मैं यहीं रहूंगा। मकान की चाबी मुझे दे दो।"

लेकिन गुलाम ने चाबी नहीं दी। वह बोला, "नहीं हुजूर, जब तक मुझे मालिक का हुक्म नहीं मिल जाएगा तब तक मैं यह मकान आपको नहीं दे सकता। आप कोई दूसरा मकान ले लें।" फिर वह दौड़ा-दौड़ा अमीर के पास गया।

जब अमीर ने यह सुना तो उसने भी अली को समझाने की बड़ी कोशिश की लेकिन उसने एक न सुनी। वह इस बात पर अड़ गया कि अगर मैं रहूंगा तो उसी मकान में रहूंगा वरना बगदाद में और कहीं जाकर टिकूंगा।

अमीर बोला, "खैर, अगर तुम इसी बात पर अड़े हो तो ठीक है, मुझे कोई एतराज नहीं। तुम वहीं रहो, लेकिन एक कागज़ पर मुझे पहले यह लिखकर दे दो कि अगर उस मकान में रहने से किसी खतरनाक मुसीबत में फंस गए, या तुम्हें कुछ हो गया तो तुम मुझे दोष नहीं दोगे। मैं इस ज़िम्मेदारी से बरी होना चाहता हूं।"

अली इसके लिए राज़ी हो गया। फौरन काज़ी की अदालत से एक आदमी बुलाया गया। उसने अदालती कागज़ तैयार किया। अली ने गवाहों के सामने उस पर अपने दस्तखत किए। लिखा-पढ़ी हो जाने के बाद सौदागर ने उस मकान की चाबी अली को सौंप दी। फिर उसने गुलामों के हाथ अली के लिए बिस्तर-कपड़े और खाने-पीने की चीज़ें भिजवा दीं। थोड़ी देर बाद अली मकान में बिल्कुल अकेला रह गया।

वह मकान में इधर-उधर घूमकर उसे अच्छी तरह देखने लगा। भीतर आंगन में उसे एक कुआं मिला। उसमे कुएं से पानी

निकाला। अपना मुंह और हाथ-पैर धोए और नमाज़ पढ़ी। थोड़ी देर बाद सौदागर के घर से एक गुलाम उसके लिए ताज़ा बना हुआ खाना लेकर पहुंचा। लेकिन वह वहां रुका नहीं और खाना रखकर वापस लौट गया।

अली ने दीया जलाया और फिर आराम से बैठकर खाना खाया। खाना खाकर उसने सोने की तैयारी शुरू की। उसने सोचा कि क्यों न मैं अपना बिस्तर ऊपर ले जाऊं। वहां हवा भी अच्छी आती होगी। वह अपना बिस्तर लेकर ऊपर पहुंचा और एक अच्छे-से सजे-सजाए कमरे में बिस्तर लगाकर लेट गया।

थोड़ी ही देर बाद अचानक उसने सुना, कोई कह रहा था, "अली! अली! बताओ, तुम्हें क्या चाहिए? कहो तो, तुम्हें कुछ सोना भेज दूं।"

पहले तो अली घबराया। उसकी समझ में नहीं आया कि यह आवाज़ कहां से आ रही है। फिर उसे याद आया कि सौदागर और उसके गुलाम ने यह बताया था कि यह मकान भुतहा है और इसमें रहना खतरे से खाली नहीं है, लेकिन फिर हिम्मत कर उसने जवाब दिया, "लाओ भेजो, कहां है सोना?"

उसका यह कहना था कि कमरे की छत से सोने की मोहरों की वर्षा होने लगी। आधा कमरा मोहरों से भर गया।

इसके बाद फिर आवाज़ आई, "लो, हमने तुम्हें सोना दे दिया। अब तुम मुझे आज़ाद कर दो। मैंने अपना काम पूरा कर दिया है। मुझे जो सोना तुम्हें देने के लिए मिला था वह मैंने तुम्हें सौंप दिया। अब मुझे यहां से जाने दो।"

अली बोला, "लेकिन खुदा के नाम पर यह तो बताओ कि यह सोना तुझे कहां से मिला है? इतनी सारी मोहरें यहां कैसे आईं?"

उस अजनबी आवाज़ ने जवाब दिया, "बात यह है कि यह खज़ाना पुराने ज़माने से इस मकान में रहता चला आया है। अब तक जो आदमी यहां सोने के लिए आया, उससे हमने यह

सवाल किया कि बोलो, 'तुम्हें सोना चाहिए ?' लेकिन आवाज़ सुनते ही लोग इस कदर डर जाते थे कि उनकी घिग्घी बंध जाती थी और मुंह से आवाज़ तक नहीं निकलती थी। उन्हें इस तरह डरते हुए देखकर मैं उन पर टूट पड़ता था। और देखते-देखते उनकी गर्दन मरोड़कर भाग जाता था। लेकिन तुम डरपोक नहीं हो। मेरी आवाज़ सुनकर तुम घबराए नहीं। उल्टे तुमने जवाब दिया और मुझसे सोना मांगा। मुझे लगा कि तुम्हीं सोने के असली मालिक हो। इसलिए सारी मोहरें मैंने तुम्हीं को सौंप दीं।

"अब आज से यह खज़ाना तुम्हारा हुआ। इसके अलावा अरब के यमन नामक शहर में तुम्हारे लिए और खज़ाना गड़ा हुआ है। तुम वहां जाकर उसे ले लो और मुझे यहां से आज़ाद कर दो, ताकि अब मैं कहीं और जा सकूं।"

यहां अली ने कुछ चालाकी से काम लिया। उसने उसे डांट-कर कहा, "नहीं, मैं तब तक तुम्हें आज़ाद नहीं कर सकता जब तक कि यमन का खज़ाना मुझे नहीं मिल जाता।"

उस अजनबी आवाज़ ने कांपते हुए पूछा, "लेकिन मालिक, अगर मैं वह खज़ाना तुम्हारे लिए ले आऊं तो क्या तुम मुझको और उस खज़ाने के रखवाले गुलाम को आज़ाद कर दोगे ?"

"हां," अली ने जवाब दिया।

"तो मालिक, कसम खाइए !"

अली ने कसम खाई और कहा, "लेकिन मेरा एक काम तुम्हें और करना होगा। काहिरा में मेरी बीवी और दो बच्चे रहते हैं। उन्हें तुम आराम से यहां ले आओ।"

उस जिन ने जवाब दिया, "ठीक है, हम लोग उन्हें सही सलामत यहां ले आएंगे।" फिर वह अली से तीन दिन की छुट्टी लेकर वहां से चल पड़ा।

सवेरे जब उजाला हुआ तो अली ने मकान को अच्छी तरह से देखना शुरू किया। वह अपनी मोहरों को कहीं छिपाकर रख देना चाहता था। एक जगह उसे पत्थर से ढका एक गुप्त दरवाज़ा

दिखाई दिया। उसने जब दरवाज़े की कल घुमाई तो दरवाज़ा धीरे-धीरे खुलने लगा। वह दरवाज़ा एक कमरे में खुलता था, जिसमें मजबूत कपड़े की बहुत-सी बोरियां रखी थीं। अली ने उन बोरियों में मोहरें भरकर उसी कमरे में रखना शुरू किया। जब वह सारी मोहरें कमरे में रख चुका तो उसने दरवाज़ा फिर उसी तरह बंद कर दिया।

फिर वह नीचे आया और एक कुर्सी पर बैठकर सुस्ताने लगा। इतने में किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। उसने दरवाज़ा खोल दिया। वह उस मकान के मालिक का गुलाम था और यह पता लगाने आया था कि रात-भर में अली का क्या हाल हुआ।

जब गुलाम ने अली को सही-सलामत देखा तो मारे खुशी के वह चीख पड़ा। यह पहली बार वह किसी आदमी को उस



भुतहे मकान में रात बिताने के बाद ज़िन्दा देख रहा था। वह दौड़ा-दौड़ा सीधे अपने मालिक के पास गया और बोला, "हुज़ूर, हुज़ूर ! मेहमान तो उस मकान में बड़े मज़े में रहा है। जब मैं गया तो वह एक कुर्सी पर आराम से बैठा था।"

सौदागर को यह सुनकर बड़ा ताज्जुब हुआ। वह अली के लिए खाना लेकर गुलाम के साथ चल पड़ा। वहां पहुंचकर उसने अली से पूछा, "कहो बिरादर, क्या हाल है ?"

"खुदा की रहम से सब कुछ ठीक है !" अली ने कहा, "मैंने रात में खाना खाया, फिर कुरान की आयतें पढ़ीं और रात भर आराम से सोता रहा। मुझे यहां किसी बात की दिक्कत नहीं हुई।"

सौदागर यह सुनकर आश्चर्य में पड़ गया। फिर वह अपने घर लौट गया, वहां से उसने बहुत-से गुलाम अली के मकान को झाड़-पोंछकर साफ करने के लिए और अच्छी तरह सजाने के लिए भेज दिए।

गुलामों ने थोड़े ही समय में मकान को खूब चमका दिया। अब वह मकान नहीं, एक छोटा-मोटा महल मालूम होता था। आस-पास के लोग मकान को देखने के लिए आने लगे और अली से जान-पहचान बढ़ाने के लिए उसे तोहफे देने लगे। लोगों ने उससे पूछना शुरू किया, "तुम्हारा सामान कब तक आने वाला है ? क्या बाल-बच्चे भी आ रहे हैं ?"

अली ने जवाब दिया, "हां, वे लोग मेरे सामान के साथ तीन दिन बाद यहां पहुंच जाएंगे।"

और तीन दिन बाद सचमुच ही वह जिन लौट आया। उसने अली से कहा, "चलिए और अपना खज़ाना संभालिए।"

जब अली ने यह सुना तो मन ही मन बहुत खुश हुआ। वह दौड़ा-दौड़ा सौदागर के पास गया और बोला, "चलो भाई, मेरे घर के लोग मेरा सामान लेकर आ रहे हैं, ज़रा आगे चलकर हम लोग उनका स्वागत करें।"

सौदागर के दोस्त तथा और भी कई लोग उसके साथ गए।

शहर के बाहर पहुंचने पर थोड़ी ही देर बार कुछ दूरी पर उन्हें धूल उड़ती हुई दिखाई दी। जब धूल कुछ साफ हुई तो उन्होंने देखा कि एक बड़ा भारी काफिला चला आ रहा है, जिसमें बहुत-से घोड़े, गधे और ऊंट भी थे। आगे-आगे बहुत-से गुलाम गाते-बजाते चल रहे थे।

कारवां पास आ गया। कारवां का बूढ़ा सरदार आगे बढ़ा और उसने अली का हाथ चूमते हुए कहा; "मालिक, खुदा का शुक्र है, बहुत दिनों बाद हम लोग आपको देखकर बहुत खुश हैं। रास्ते में हमें बड़ी देरी हो गई। वैसे तो हम कल ही यहां पहुंच गए होते, लेकिन रास्ते में हमें डाकुओं का डर था इसलिए एक जगह रुककर रात बितानी पड़ी।" अली अपने मित्र सौदागर तथा दूसरे जान-पहचान के लोगों के साथ अपने घोड़े पर सवार होकर कारवां के आगे-आगे चल पड़ा।

उसके साथ जो दूसरे कई सौदागर चल रहे थे, उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि उस कारवां में जितने भी जानवर थे उन सब पर सामान के बड़े-बड़े डिब्बे और बोरे लदे हुए थे। कारवां के पीछे सजे-सजाए ऊंटों पर अली की बीवी और उसके बच्चे चले आ रहे थे। यह सब ठाट देखकर सौदागर कहने लगे, "सचमुच, इतनी दौलत तो बगदाद के बादशाह के पास भी नहीं होगी; यह बड़ा अमीर आदमी मालूम होता है।"

जब सब लोग चले गए तो अली के दोस्त उस सौदागर ने उससे कहा, "तुम अपने नौकर-चाकरों से कहो कि वे घोड़े, ऊंट और दूसरे जानवरों को लेकर मेरे दूसरे मकानों में आराम करने के लिए चले जाएं।"

लेकिन अली बोला, "नहीं, ये लोग यहां रुकेंगे नहीं। इनको और आगे सफर में जाना है।" और जब सौदागर लौट गया तो अली ने उन सब लोगों को छुट्टी दे दी। वे लोग कोई और नहीं उस मकान के और खज़ाने के पास रहने वाले जिन ही थे। जब उन्हें जाने की आज्ञा मिली तो मारे खुशी के वे नाच उठे और

देखते-देखते आसमान में अपनी-अपनी जगह वापस लौट गए।

जब सब लोग चले गए तो अली ने अपनी बीवी से पूछा, "अच्छा अब बताओ, मेरी गैरहाज़िरी में तुम पर क्या-क्या गुज़री ?" वह सिसकते हुए सारा किस्सा बताने लगी। उसने बताया कि उसे बड़े बुरे दिन काटने पड़े—भूख और गरीबी के दिन। यह सब सुनकर अली को बड़ा अफसोस हुआ। फिर वह बोला, "खैर, खुदा का शुक्र मानो कि आज उसने फिर हमें अच्छा दिन दिखाया है। तुम सामान के साथ सही-सलामत यहां पहुंच गईं, यही कौन-सी कम बड़ी बात है। अब आराम से यहां रहो, लेकिन यह तो बताओ कि तुम यहां कैसे पहुंचीं ?"

वह बोली, "क्या बताऊं, मेरे मालिक ! कल रात जब मैं बच्चों के साथ सोई थी, तो एकाएक मैंने देखा कि हमारा बिस्तर मकान से बाहर निकल आया है और हवा में उड़ा जा रहा है। मारे डर के मेरी घिग्घी बंध गई। बच्चे भी बुरी तरह घबरा गए, लेकिन हमें कोई दिक्कत नहीं हुई। हमारा बिस्तर उड़ते-उड़ते एक बड़े भारी कारवां के पास आकर रुक गया। कारवां में सैकड़ों घोड़े, ऊंट और गधे थे न मालूम कितनी गाड़ियां थीं। पचासों आदमी उस कारवां के साथ थे। मैंने उन लोगों से पूछा कि तुम सब कौन हो।

"उन लोगों ने बताया कि 'हम लोग काहिरा के अली के गुलाम हैं, वही अली जो हसन जौहरी का बेटा है। वह बगदाद में है और उसने हम लोगों को तुम्हें ले आने के लिए भेजा है।"

"मैंने उनसे पूछा कि बगदाद यहां से बहुत दूर है, या पास ही है ? उन लोगों ने जवाब दिया कि पास ही है, बस यहां से कोई एक रात का सफर समझो। फिर उस कारवां के सबसे बूढ़े गुलाम ने मुझे और बच्चों को पहनने के लिए एक बड़े भारी सन्दूक में से बहुत अच्छे-अच्छे कपड़े निकालकर दिए, फिर दूसरे डिब्बे में से उसने मेरे लिए कुछ गहने निकाले। इन चीज़ों को मुझे देते हुए उसने कहा,'अब अपने सामान की देखभाल तुम खुद करो।

ये लो, सारे सामान की चाबियां, संभालकर अली को दे देना।' यह कहकर उसने सारे सामान की चाबियां मुझे दे दीं। अब आप इन चाबियों को संभालिए।"

इस तरह अपना किस्सा सुनाने के बाद अली की बीवी ने चाबियां उसे दे दीं। अली ने उसके साथ मिलकर अपना सामान देखना शुरू किया। अली को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। इतना धन तो उसने आज तक कभी देखा ही नहीं था।

बड़े-बड़े सन्दूकों में हीरे-जवाहरात और अशर्फियां भरी हुई थीं। अली एक के बाद एक सन्दूक खोलता जा रहा था। किसी सन्दूक में मोती भरे थे तो किसी में सोने-चांदी की चीजें। इतना धन तो किसी बादशाह के पास नहीं होगा। यह सब देखने के बाद अली अपनी बीवी को उस गुप्त दरवाजे के पास ले आया, जिसके भीतर तहखाने में उसने अशर्फियां जमा कर रखी थीं।

दरवाज़ा खोलते ही उसकी बीवी भौचक्की रह गई। पूरा कमरा अशर्फियों के बोरों से भरा था। वह बोली, "इतना सारा सोना कहां से आया?"

अली बोला, "सब खुदा का रहम है वरना मेरी क्या बिसात!"

फिर उसने उससे सारा किस्सा कह सुनाया कि काहिरा छोड़ने के बाद से वह कहां रहा और उस पर क्या-क्या बीती।

उसकी बीवी ने कहा, "खुदा का शुक्र है कि उसने फिर से तुम्हारी मदद कर दी, वरना आज मेरा और बच्चों का क्या हुआ होता! भिखारियों की तरह मारे-मारे फिरते। खुदा ने मेरी दुआ सुन ली। अब आगे से तुम अपने अब्बा की हिदायतें याद रखना और हमेशा भले लोगों का साथ ही करना, तभी यह दौलत तुम्हारे पास बच सकेगी।"

अली ने उसकी बात मान ली। अब वह बहुत समझ-बूझकर अपना रोज़गार चलाने लगा। कुछ ही दिनों में यह बगदाद का सबसे बड़ा सौदागर बन गया। उसके पास जितनी ज़मीन-जायदाद और दौलत थी उतनी बादशाह के पास भी न थी।



अलीबाबा और चालीस चोर

फारस देश में दो भाई रहते थे। एक का नाम था अलीबाबा और दूसरे का नाम कासिम। अपने पिता के मरने पर दोनों ने घर का रुपया आधा-आधा बांट लिया। कासिम ने अपनी शादी कर ली और एक दूकान खोल ली। अलीबाबा ने अपने रुपयों में गधे ख़रीदे और जंगल से लकड़ियां काटकर शहर में बेचना शुरू किया।

एक दिन की बात है, अलीबाबा एक पहाड़ के पास जंगल में लकड़ी काट रहा था। अचानक उसने धूल उड़ती देखी। थोड़ी ही देर बाद उसने देखा कि चालीस सवार घोड़ा दौड़ाते हुए चले आ रहे हैं। उनके कपड़े खून से तर थे। अलीबाबा मारे डर के कांपने लगा और एक पेड़ पर चढ़कर उसकी डालियों में छिपकर बैठ गया।

थोड़ी देर में सवार आ गए। उनके सरदार ने घोड़े से उतर कर पहाड़ में बने एक गुप्त दरवाज़े के सामने खड़े होकर कहा, "खुल-सम-सम !" अलीबाबा ने आश्चर्य से देखा कि दरवाज़ा खुल गया और सब आदमी उसमें चले गए। फिर दरवाज़ा अपने-आप बन्द हो गया। थोड़ी देर बाद दरवाज़ा फिर खुला और उसमें से निकलकर सब सवार दूसरी तरफ चले गए।

उन लोगों के चले जाने पर अलीबाबा पेड़ से उतरा और उस दरवाज़े के पास जाकर बोला, "खुल-सम-सम !" दरवाज़ा खुल गया।

डरते-डरते अलीबाबा अन्दर चला गया। उसने देखा कि सारा कमरा हीरे, जवाहरात और सोने की अशर्फियों से भरा है। इतना



धन तो उसने सपने में भी नहीं देखा था। अलीबाबा ने थोड़ी-सी अशर्फियां ले लीं और गधे पर लादकर ऊपर ये लकड़ियां रख दीं। फिर उसी तरह दरवाज़ा बन्द करके वह घर लौट आया।

घर जाने पर उसकी बीवी ने पूछा, "इतनी अशर्फियां कहां से ले आए? हाय अल्लाह, ये तो बहुत सारी हैं!"

अलीबाबा ने कहा, "फिर कभी बताऊंगा। अभी तुम जाओ और कासिम की बीवी से तराज़ू मांग लाओ। देख, कितनी अशर्फियां हैं।"

उसकी बीवी गई और तराज़ू मांग लाई। लेकिन कासिम की बीवी बड़ी चालाक थी। उसने तराज़ू के पलड़े के नीचे मोम लगा दिया ताकि यह मालूम हो सके कि क्या तोला गया। अलीबाबा की बीवी ने अशर्फियां तोलकर गाड़ दीं और तराज़ू वापस लौटा आई।

कासिम की बीवी ने देखा कि उसमें नीचे एक अशर्फी चिपकी हुई थी। रात में जब कासिम घर आया तो उसकी बीवी ने उसे सारा किस्सा बताया और अशर्फी दिखाई। कासिम बोला, "हां, यह तो अशर्फी ही है! मैं पता लगाऊंगा।"

उसने अलीबाबा से पूछा। अलीबाबा बहुत सीधा आदमी था और अपने भाई को प्यार करता था। उसने उसे सारा भेद बता दिया। कासिम दौड़ा-दौड़ा जंगल में गया। उसने दरवाज़े के सामने जाकर उन्हीं शब्दों को दोहराया। दरवाजा खुल गया। अन्दर जाकर उसने खूब अशर्फियां भरीं। लेकिन खुशी-खुशी में वह 'सम-सम' कहना भूल गया और अन्दर ही बन्द रह गया। बाद में डाकू आए और उन्होंने उसे मार डाला।

कासिम की बीवी ने अलीबाबा को कासिम के घर न आने का हाल बताया। अलीबाबा वहां गया और कासिम की लाश उठा लाया। घर लाकर उसने लाश कासिम की बीवी मरजीना को दे दी। रोने-पीटने के बाद मरजीना उठकर मुस्तफा नाम के दर्ज़ी के पास गई।

मुस्तफा कफन सिला करता था। मरजीना ने मुस्तफा के हाथ में एक अशर्फी रखकर कहा, "मेरे साथ चलो, मुझे कफन सिलवाना है। लेकिन शर्त यह है कि तुम्हें आंखों पर पट्टी बांधकर ले चलूंगी।" दर्ज़ी राज़ी नहीं हुआ। अन्त में जब मरजीना ने दूसरी अशर्फी उसके हाथ पर रखी तो वह लालच में आकर राज़ी हो गया।

मरजीना ने अपनी चादर उतारकर उसकी आंखों पर लपेट दी और उसे एक अंधेरी कोठरी में ले आई। वहां उसने आंखें खोल दीं और मशालों को जला दिया। उसने दर्ज़ी से कहा, "जल्दी से इनके नाप का कफन बना दो। मैं तुम्हें एक अशर्फी और दूंगी।

दर्ज़ी ने कफन तैयार कर दिया। मरजीना ने फिर उसकी आंखों पर पट्टी बांधकर उसे गली में ले जाकर छोड़ दिया। फिर अलीबाबा को साथ लेकर चुपचाप उसने लाश को दफन कर दिया।

चालीस रोज़ बाद अलाबाबा ने मरजीना से शादी कर ली। अलीबाबा का बेटा व्यापार में बड़ा होशियार था। उसे कासिम की दुकान पर बिठा दिया गया। धीरे-धीरे बड़े आराम से दिन बीतने लगे। अलीबाबा अब बहुत अमीर हो गया था। अब वह पहले जैसा लकड़हारा नहीं रहा।

उधर कुछ दिनों बाद चोर जब अपने खज़ाने को लौटे तो वहां कासिम की लाश को न पाकर दंग रह गए। उन्हें अब शक हो गया कि किसी को इस खज़ाने का भेद मालूम हो गया है। वे लोग घबराए कि कहीं इस तरह एक दिन उनका खज़ाना ही कोई न उठा ले जाए। अन्त में चोरों के सरदार ने तय किया कि मैं उस आदमी का पता लगाऊंगा। वह भेस बदलकर शहर में पहुंचा। बाज़ार की सब दुकानें बन्द हो गई थीं, लेकिन मुस्तफा दर्जी अपनी दुकान में बैठा कुछ सिल रहा था। डाकू ने जाकर उससे बातचीत शुरू की। बात-बात में दर्ज़ी ने बताया, "मेरे जैसा

शहर में कोई नहीं मिलेगा। मैंने आंखों पर पट्टी बांधकर एक आदमी का कफन सिला है।"

डाकू को यही पता लगाना था। उसने फौरन दर्ज़ी के हाथ पर एक अशर्फी रखी और उससे उस मकान का पता पूछा। पहले तो दर्ज़ी इंकार करता रहा, लेकिन फिर लालच में आकर वह डाकू के साथ जाने के लिए तैयार हो गया। उस दिन मरजीना उसकी आंखों पर पट्टी बांधकर ले गई थी, लेकिन किसी तरह अन्दाज़ से दर्ज़ी ने उसका घर ढूंढ़ लिया। डाकू ने घर के दरवाज़े पर खड़िया से एक निशान बना दिया और फिर वह अपने साथियों के पास पहुंचा।

उधर जब मरजीना किसी काम से बाहर आई तो उसने देखा कि दरवाज़े पर निशान बना है। वह फौरन समझ गई कि यह दुश्मन का काम है। वह बड़ी चालाक थी। उसने मुहल्ले के सारे दरवाज़ों पर निशान बना दिए।

दूसरे दिन डाकुओं का सरदार अपने साथियों के साथ उस मुहल्ले में पहुंचा। लेकिन उसके लिए उस घर को ढूंढ़ना मुश्किल हो गया, क्योंकि मुहल्ले के सभी दरवाज़ों पर वैसे ही निशान बने थे। अन्त में हारकर डाकू वापस लौट गए।

लेकिन धीरे-धीरे डाकुओं ने पता लगा लिया कि अलीबाबा के घर में ही इस सारे मामले का राज़ है। हो सकता है कि अलीबाबा ही खज़ाने का भेद जानता हो। अन्त में एक दिन डाकुओं के सरदार ने एक नई चाल चली। उसने अपने साथियों से कुछ बड़े-बड़े कुप्पे ख़रीद लाने को कहा। फिर एक कुप्पे में तेल भरकर और बाकी कुप्पों में अपने साथियों को बिठाकर उसने तेल बेचने वाले एक सौदागर का भेस बनाया।

रात को डाकुओं का सरदार सब कुप्पों को खच्चर पर लादे अलीबाबा के घर पहुंचा। उसने अलीबाबा को सलाम करके कहा, "मालिक, मैं एक गरीब मुसाफिर हूं। आसपास तेल बेच-कर अपना काम चलाता हूं। लेकिन आज तेल नहीं बिका और

रात भी ज़्यादा हो गई । मुझे अपने यहां रात बिताने की जगह दे दीजिए ।"

अलीबाबा रहमदिल आदमी था । उसने उस बनावटी सौदागर को अपने यहां ठहरने की जगह दे दी । गुलामों ने उसके खच्चरों को दाना डाल दिया । मरजीना ने डाकू के सोने के लिए एक पलंग बिछा दिया । सब लोग सोने चले गए ।

लेकिन मरजीना को नींद नहीं आई । अचानक थोड़ी देर बाद उसने देखा कि उसका मेहमान रात में उठा और कुप्पों के पास जाकर बोला, "देखो, तुम लोग सो मत जाना, मैं तीन-चार घड़ी बाद आऊंगा, इस बीच मैं ज़रा आराम करना चाहता हूं ।"

कुप्पों में से आवाज़ आई, "नहीं सरदार, हम सब लोग जाग रहे हैं । आप आराम से सोइए । मौके पर हम सब तैयार मिलेंगे !"

मरजीना यह सब सुन रही थी । उसे मालूम हो गया कि ये लोग डाकू हैं । वह फौरन कुप्पों के पास आई । उसने देखा कि सिर्फ एक कुप्पे में तेल भरा है, बाकी में डाकू बैठे हैं । वह चुपचाप रसोई में गई और आग जलाकर चूल्हे पर एक बड़ी-सी देगची में तेल गरम करना शुरू किया । जब तेल खौलने लगा तो मरजीना देगची लेकर कुप्पों के पास पहुंची । उसके पैरों की आहट पाकर डाकुओं ने पूछा, "सरदार, बाहर निकलें ?"

मरजीना ने बनावटी आवाज़ में कहा, "अभी नहीं ।" और फिर एक-एक कुप्पे का मुंह खोलकर उसने सबमें खौलता हुआ तेल डालना शुरू किया । इस तरह सब डाकू कुप्पे में गरम तेल से जल मरे । फिर मरजीना आराम से जाकर सो गई ।

कुछ देर बाद डाकुओं के सरदार की नींद खुली । उसने कुप्पों के पास जाकर अपने साथियों को आवाज़ दी । जब किसी ने जवाब नहीं दिया तो उसने सोचा कि ये लोग सो गए हैं । उसने झल्लाकर जैसे ही एक कुप्पे का मुंह खोला कि मारे बदबू के

उसकी नाक फटने लगी । अन्दर से जले हुए शरीर की बदबू आ रही थी । इसी तरह दो-तीन कुप्पे देखने के बाद वह समझ गया कि सारे साथी मारे जा चुके हैं । उसे अपनी जान की फिक्र पड़ी । वह फौरन दीवार फांदकर वहां से भाग निकला ।

दूसरे दिन सवेरे मरजीना ने अलीबाबा को सारा किस्सा बताया । अलीबाबा कुछ घबराया तो मरजीना बोली, "तुम कोई ख्याल न करो । जिसको खुदा बचाता है उसे कोई नहीं मार सकता । जल्दी से गुलामों को बुलाओ और बाग में एक बड़ा-सा गड्ढा खुदवाओ ।" अलीबाबा ने गड्ढा खुदवाकर सारे कुप्पे ज़मीन में दफन कर दिए ।

उधर डाकुओं का सरदार अपनी ज़िन्दगी की खैर मनाता हुआ भागा-भागा फिर रहा था । रातों-रात वह अपने किले में पहुंच गया और वहीं सो गया । दूसरे दिन सुबह उठकर वह फिर से शहर में आया और एक सराय में ठहर गया । उसने सोचा कि अलीबाबा बहुत ही चालाक आदमी है । उसने मेरे इतने साथियों को मार डाला । कहीं ऐसा न हो कि मेरी जान भी उसी के हाथों जाए । इसलिए उसने बड़ी सावधानी से काम करने का निश्चय किया ।

वह खज़ाने से कुछ रुपया ले आया और बाज़ार में वही पास में एक दुकान खोल ली, जहां कासिम की दुकान थी । उसने अपना नाम ख्वाजाहसन रखा । कुछ ही दिनों में आस-पास के दुकानदारों से उसने राह-रस्म पैदा कर ली ।

अलीबाबा का लड़का भी मिलनसार था । डाकुओं के सरदार से उसकी अच्छी पटने लगी । भला उसे क्या पता था कि यह उसके पिता का दुश्मन है । डाकुओं का सरदार अक्सर उसे अपनी दुकान में बुलाया करता था और उसकी दावत किया करता था । एक दिन अलीबाबा के लड़के ने सोचा कि मुझे भी इसे दावत देनी चाहिए । उसने अपने पिता से कहा । अलीबाबा राज़ी हो गया और बोला, "कोई हर्ज़ नहीं, ख्वाजाहसन

तिजारत के काम में तुम्हारा दोस्त है, इसलिए शौक से उसकी दावत करो। कल जुम्मा है। दोनों मस्जिद जाओ और वहीं से उसे घर ले आओ। मैं मरजीना से कह दूंगा। वह बढ़िया खाना तैयार कर रखेगी।"

दूसरे दिन लड़का ख्वाजाहसन को अपने घर ले आया। अलीबाबा ने उससे खाना खाने को कहा। पहले तो वह साफ इंकार करता रहा। लेकिन अन्त में बोला, "असल में बात यह है कि मैं आजकल बीमार रहता हूं और हकीम ने मुझे नमक खाने से मना कर रखा है। इसलिए मैं नमक नहीं खाऊंगा।"

अलीबाबा ने कहा, "क्या हुआ, अगर आप नमक नही खाते तो मीठा ही खाइए।" फिर अलीबाबा ने मरजीना के पास जाकर कहा, "मेहमान नमक नहीं खाते, उनके लिए कुछ मीठी चीज़ें तैयार कर दो।"

यह सुनते ही मरजीना के कान खड़े हो गए। उसने सोचा कि ज़रूर दाल में कुछ काला है। वह बोली, "भला ऐसा कौन-सा आदमी है जो हमारा नमक खाने से इंकार करता है।" लेकिन उसने मीठी चीज़ें तैयार कर दीं। इस बार वह खुद दस्तरखान पर खाना चुनने गई। उसने एक निगाह में ही डाकू को पहचान लिया। उसकी तेज़ नज़रों से यह भी नहीं छिप सका कि मेहमान अपनी कमर में खंजर छिपाए है, और मेरे पति की जान लेनें आया है। उसने तय किया कि मैं आज शाम को ही इसका काम तमाम कर दूंगी।

खाना लगाकर मरजीना घर में आई और उसने अब्दुल्ला नाम के अपने एक गुलाम के साथ मिलकर डाकुओं के सरदार को मारने की योजना बनाई। उधर खाना खत्म होने के बाद शराब का दौर चला। डाकू अलीबाबा और उसके लड़के को खूब शराब पिला रहा था। उसने सोच रखा था कि दोनों जब नशे में बदहवास हो जाएंगे तो मैं दोनों का काम तमाम कर दूंगा और बाग की राह से भाग निकलूंगा।

लेकिन उसे इसका मौका नहीं मिल सका। मरजीना ने एक नाचने वाली का भेस बनाया और उसका गुलाम अब्दुल्ला भी भेस बदलकर और तबला लेकर तैयार हो गया। फिर दोनों पीछे के रास्ते से निकलकर मकान के दरवाज़े पर पहुंचे। अलीबाबा ने जब यह देखा कि बिना बुलाए ही एक नाचने वाली आ पहुंची है तो क्यों न उसका नाच कराया जाए और अपने मेहमान को नाच दिखाकर खुश किया जाए। उसे उसने अन्दर बुला लिया और कहा, "ऐसा नाच दिखाओ कि हमारे मेहमान की तबियत खुश हो जाए!"

मेहमान बोला, "जनाब, आपने तो आज की दावत को जैसे एक जशन (त्योहार) बना दिया है! मैं तो आपके अहसान से दबा जा रहा हूं।" लेकिन मन में वह नाचने वाली को गाली देने लगा, क्योंकि इससे उसकी सारी चाल पर पानी फिरने का भय था। लेकिन उसने सोचा कि नाच के खतम होते ही में अली बाबा को मारकर भाग निकलूंगा।

इधर मरजीना हाथ में खंजर लेकर नाच दिखा रही थी। उसका नाच सबको बड़ा अच्छा लगा। कभी वह खंजर को कमर में खोंसती और कभी उसे हवा में उछालती। इस तरह वह मेहमान को खुश करने की कोशिश कर रही थी। नाचते-नाचते वह अलीबाबा के सामने आई। अलीबाबा ने एक अशर्फी निकालकर उसके हाथ पर रख दी। फिर वह अलीबाबा के लड़के के पास गई। उसने भी एक अशर्फी उसके हाथ पर रख दी।

डाकुओं के सरदार ने सोचा कि अब वह मेरे पास आएगी। इसलिए वह पहले से ही अपनी जेब से अशर्फी निकालने लगा। लेकिन मरजीना ने उसके पास पहुंचकर धीरे से अपना खंजर उसके सीने में भोंक दिया। वह ज़ोर से चीख भी न सका और उसके प्राण निकल गए।

अलीबाबा घबराकर अपने मेहमान की मदद के लिए दौड़ा। लेकिन मरजीना ने अपने चेहरे पर से दुपट्टा हटा दिया। अली-

बाबा मरजीना को पहचानकर ज़ोर से चिल्ला पड़ा और बोला, "तुमने यह क्या किया ! मैं बेकार ही बदनाम हो जाऊंगा । कल हाकिम मुझे इसके खून का मुज़रिम ठहराएगा ।"

लेकिन मरजीना ने हंसकर कहा, "रहने भी दो, खुदा का शुक्र करो ! तुम्हारी जान बची ! ज़रा इसे पहचानो तो सही, यह कौन है ! यह वही डाकू है, जो पहले तेलफरोश बनकर तुम्हें मारने आया था । आज भी यह तुम्हारी जान लेने की फिराक में था । इसीलिए यह नमक खाने से इन्कार कर रहा था, ताकि नमकहराम न कहलाए । देखो, इसने अपनी कमर में खंजर छिपा रखा है !"

अब अलीबाबा को उसकी बात पर विश्वास हो गया । वह बहुत खुश हुआ और बोला, "मरजीना, तुमने मुझपर बड़ा अहसान किया है । तुमने एक बार पहले भी मेरी जान बचाई है । आज मैं तुमसे बहुत खुश हूं ।"

फिर अलीबाबा ने अपने बाग में गड्ढा खोदकर डाकुओं के सरदार की लाश भी छिपा दी । इसके बाद एक दिन मौका देखकर वह कई खच्चर लेकर डाकुओं के छिपे खज़ाने में पहुंचा और सारा खज़ाना लादकर घर ले आया । अब अलीबाबा के पास लाखों रुपये का माल हो गया । उसके जैसा अमीर चारों तरफ दूर-दूर तक कोई नहीं था । इस धन को अलीबाबा ने सिर्फ अपने लिए ही नहीं रखा, बल्कि इससे वह हमेशा गरीबों और अपाहिजों की मदद किया करता था । उसने कई मस्जिदें बनवाईं और गरीबों के लिए गरीबखाने बनवाए । धीरे-धीरे चारों तरफ उनका नाम फैलने लगा और लोग उसकी तारीफ करने लगे ।



जानवरों की बोली समझने वाला

एक शेख था। वह बहुत अमीर था। उसे किसी बात की कमी नहीं थी। जानवर भी उसके पास बहुत थे। भेड़-बकरी, गाय-बैल, घोड़े और बहुत-से ऊंट और गधे वगैरह भी उसके पास थे। वह अपने बाल-बच्चों के साथ अपनी ज़मींदारी में आराम से रहता था।

ईश्वर की कृपा से यह अमीर जानवरों की बोली समझ लेता था। लेकिन अपना यह ज्ञान उसे अपने पास ही रखना पड़ता था। इसके बारे में वह किसी को कुछ बता नहीं सकता था, क्योंकि इसमें उसकी जान जाने का खतरा था।

शेख के जानवरों में एक बैल और एक गधा भी था। ये दोनों पास-पास बांधे जाते थे। पड़ोसी होने के कारण इन दोनों में अच्छी दोस्ती थी। एक दिन की बात है, शेख अपने नौकरों से बातचीत कर रहा था। पास ही उसके बच्चे भी खेल रहे थे। इतने में शेख ने सुना कि बैल गधे से कह रहा है :

"गधे भाई, सलाम ! कहो क्या हाल है ? आजकल तो तुम खूब आराम कर रहे हो। तुम्हारी सेवा-चाकरी भी खूब होती है। देखो न, तुम्हारे आसपास की ज़मीन बिलकुल साफ-सुथरी है। हमेशा नौकरों की नज़र तुमपर ही रहती है। वे तुम्हें अच्छा दाना खिलाते और नहर से ताज़ा पानी लाकर तुम्हें पिलाते हैं।

"लेकिन मैं तो बड़ा अभागा प्राणी हूं। मुझे तो एक क्षण आराम नहीं मिलता। यहां तक कि आधी रात में भी मुझे हल खींचने के लिए ले जाया जाता है। सवेरे शाम तक कड़ी मेहनत करके मैं बुरी तरह थक जाता हूं। मुझसे ज़रूरत से ज़्यादा काम

लिया जाता है। इतना काम मेरी ताकत से बाहर है। यही नहीं, काम के साथ-साथ मुझे गालियां भी खानी पड़ती हैं। शाम को जब मैं काम से लौटता हूं तो थककर चूर हो जाता हूं। मेरे पैरों में और गर्दन में बड़ी तकलीफ होती है।

इसके बाद ये लोग मुझे बन्द कर देते हैं और खाने के लिए थोड़ा-सा दाना और घास-भूसा डाल देते हैं, जिसमें मिट्टी मिली रहती है। रात-भर मैं कीचड़ और पानी में पड़ा रहता हूं।



"लेकिन तुम्हें हमेशा बहुत साफ-सुथरी जगह में रखा जाता है, क्योंकि तुम पर मालिक सवारी करता है। उसकी सवारी के अलावा तुमसे और कोई काम नहीं लिया जाता। तुमको मेरे बजाय बहुत आराम मिलता है, मुझसे ज़्यादा खाने को मिलता है। मैं जब काम करता हूं तो तुम सोते रहते हो।"

जब बैल अपनी बात कह चुका तो गधा उसकी ओर मुड़कर बोला, "ओ दुखी प्राणी, सचमुच तुम बड़े परेशान रहते हो। लेकिन तुम बड़े मूर्ख प्राणी हो! तुम दूसरों के लिए रात-दिन काम करते-करते अपनी जान दे रहे हो। लेकिन अपना भला-बुरा कुछ नहीं विचारते। दिन-दिन काम करके अपने को थका डालते हो।

"सुनो, बैल भाई, जब वे लोग तुम्हें मेरे पास बांध देते हैं, तब भी तुम कोई एतराज़ नहीं करते तो ये लोग यही समझते हैं कि तुम प्रसन्न और सन्तुष्ट हो। जब तुम्हें चारा दिया जाता है, तो तुम भुक्खड़ की तरह उस पर टूट पड़ते हो। अब बताओ, लोग कैसे समझेंगे कि तुम्हें वह दाना पसन्द नहीं है। लेकिन अगर तुम मेरी बात मानो और मेरी राय के मुताबिक चलो तो बहुत मुमकिन है कि तुम्हारी हालत सुधर जाए और तुम मुझसे भी ज़्यादा आराम की ज़िन्दगी बसर करोगे।

"जब तुम्हें खेत में ले जाया जाए और तुम्हारी गर्दन पर जुआ रखा जाए तो उसे खींचने के बजाय तुम वहीं ज़मीन पर लेट जाया करो। अगर तुम्हें खूब पीटा जाए तो भी तुम उठो मत, जैसे ही उठो कि फिर से लेट जाओ।

"जब तुम्हें खाना दिया जाए तो उसे एकदम खाने मत लगना बल्कि उसे सूंघकर अपना मुंह फेर लेना। इसका मतलब यह होगा कि तुम बीमार हो। दो-तीन दिन तक तुम इसी तरह करते रहना। ऐसा करने पर तुम्हें ज़रूर ही आराम मिलेगा और तुमसे कोई भी काम नहीं लिया जाएगा।"

बैल चुपचाप गधे की यह सीख सुनता रहा। वह जानता था

कि गधा उसका मित्र है और जो कुछ कह रहा है उसके भले के लिए ही कह रहा है। उसने गधे को धन्यवाद दिया और कहा, "ओ मेरे बुद्धिमान मित्र, तुम्हारी राय बिल्कुल सही है। तुमने मुझे जो कुछ सीख दी है, मैं उसी पर चलूंगा।"

लेकिन इन दोनों को यह नहीं मालूम था कि अमीर वहीं पास बैठा था और इनकी बात सुन रहा था। उसे फौरन मालूम हो गया कि इन दोनों ने क्या तय किया है।

दूसरे दिन जब शेख का नौकर बैल को खेत पर ले गया और उसे हल में जोतने लगा तो बैल ने काम करने से इंकार कर दिया। शेख भी उस दिन खेत पर गया था। वह जानता था कि बैल बहानेबाज़ी कर रहा है। उसने उसे पीटना शुरू किया। बहुत मार पड़ने पर वह हल तोड़कर भाग निकला। लेकिन शेख ने उसे फिर पकड़ लिया और पीटना शुरू किया, यहां तक कि पीटते-पीटते उसे अधमरा कर डाला।

लेकिन बैल आखिर तक ढीठ बना रहा। उसने उठने का नाम तक नहीं लिया। अन्त में पीटते-पीटते नौकर उसे घर ले आया। उसकी अपनी जगह बांधकर उसने उसे खाने के लिए दाना दिया। लेकिन बैल ने उसे सूंघकर मुंह फेर लिया। वह दाने से दूर हटकर एक कोने में जा बैठा और रात-भर इसी तरह बैठा रहा।

दूसरे दिन नौकर जब वहां आया तो उसने देखा कि दाना और घास-भूसा सब कुछ वैसा ही पड़ा है, बैल ने उसे छुआ तक नहीं। वह एक कोने में मिट्टी में लथ-पथ हुआ बैठा था। नौकर ने सोचा कि हो सकता है, यह सचमुच बीमार हो गया हो, क्योंकि कल इसने काम नहीं किया, रात में दाना भी नहीं खाया और अभी तक भूखा बैठा है।

नौकर ने समझा कि सचमुच बैल बीमार हो गया है। वह दौड़ा-दौड़ा शेख के पास गया। लेकिन शेख तो पहले से ही सब कुछ जानता था। उसने अपने नौकर को हुक्म दिया, "तुम गधे को

ले जाकर हल में जोतो और उससे बैल का पूरा काम लो।"

नौकर गधे को खींचते हुए खेत में ले गया। उसने उसे ही हल में जोत दिया और उससे दिन-भर बैल का काम लिया। जब गधा थककर गिर गया तो नौकर ने चाबुक से उसे खूब पीटा। पीटते-पीटते वह उसे घर ले आया।

जब रात में गधा घर पहुंचा तो वह इतना थक चुका था कि उससे एक पैर भी उठाते नहीं बनता था। उधर उसका साथी बैल बड़े मज़े से जुगाली कर रहा था। दिन-भर उसे कोई काम नहीं करना पड़ा था और अच्छा खाना खाने को मिला था। इस आराम के लिए वह आज दिन-भर गधे को धन्यवाद देता रहा लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि उधर गधे पर क्या बीत रही थी।

जब गधा लंगड़ाता हुआ उसके पास आया तो बैल ने उठकर उसका स्वागत किया और कहा, "आओ भैया, तुम्हारी लम्बी उम्र हो। तुम्हारी सलाह मानकर आज मैं दिन-भर बड़े आराम से रहा हूं। इसके लिए तुम्हें धन्यवाद देता हूं। सचमुच तुम संसार में सबसे अधिक बुद्धिमान प्राणी हो। आज मैंने दिन-भर खूब खाया और आराम से ऊंघता रहा हूं। अच्छा बताओ, तुम्हारा दिन कैसा कटा?"

लेकिन गधे ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बुरी तरह थका हुआ था और साथ ही उसे गुस्सा भी आ रहा था, क्योंकि उसे बिना किसी कारण से इतनी मार खानी पड़ी थी। अन्त में एक आह भरकर उसने अपने मन में कहा, 'तुम मुझे बुद्धिमान कहते हो, लेकिन मैं तो दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख हूं। अब तक मैं बड़े मज़े में खुशी-खुशी दिन काटता था। लेकिन अपनी बेवकूफी के कारण ही मुझे इतना दुःख भोगना पड़ा है। खैर कोई बात नहीं। अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है। मुझे कोशिश करके तुम्हें फिर से उसी जगह भेजना चाहिए, वरना, काम करते-करते और मार खाते-खाते मेरी तो जान ही निकल जाएगी।'

यह सोचकर वह चुपचाप दाना खाने लगा। उस दिन रात को शेख अपने बाल-बच्चों के साथ चांदनी रात में सामने छत पर आ बैठा। थोड़ी देर में उसने सुना कि गधा बैल से कह रहा था, "क्यों हज़रत, अब कल क्या करने का विचार है?"

बैल ने फौरन जवाब दिया, "और क्या विचार हो सकता है! बस, मैं तुम्हारी ही सलाह पर चलूंगा। तुम्हारी सलाह से मुझे आज जितना आराम मिला, उतना ज़िन्दगी में कभी नहीं मिला। मैं तो कल भी इसी तरह बहाना बना लूंगा।"

लेकिन गधा सिर हिलाकर बोला, "नहीं, नहीं, ऐसा न करना!"

"क्यों, क्या बात है?"

गधा बड़ी गम्भीरता से बोला, "सुनो, अब ऐसा कभी मत करना। मेरी राय मानो। जानते हो आज मैंने मालिक को क्या कहते सुना? वह कह रहा था कि अगर कल तक बैल काम के लायक नहीं होता तो उसे किसी कसाई के हाथ बेच देना चाहिए। कुछ पैसा मिल जाएगा। उसके चमड़े से एक थैला बनवा लिया जाएगा। इसलिए बैल भैया, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें आराम करते-करते अपनी जान दे देनी पड़े। ज़्यादा अच्छा यह है कि तुम कल से अपने काम पर लग जाओ।"

इधर शेख अपनी छत पर बैठा यह सब सुन रहा था। गधे की यह चालाकी की बात सुनकर उसे हंसी आ गई। हंसते-हंसते उसके पेट में बल पड़ गए और वह पीठ के बल उलट गया। फिर भी उसकी हंसी न थमी।

उसकी बीवी ने पूछा, "क्या बात है, तुम इस कदर हंस क्यों रहे हो?"

उसने जवाब दिया, "मुझे उस गधे और बैल की बातचीत पर हंसी आ रही है। लेकिन मैं तुम्हें यह बता नहीं सकता कि उनके बीच क्या बातचीत हुई है।"

उसकी बीवी ने कहा, "नहीं, तुम्हें मुझे बताना ही होगा कि

तुम किस बात पर हंस रहे हो ?"

"मैंने कहा न कि मैं तुम्हें बता नहीं सकता, वरना मेरी मौत हो जाएगी।"

वह बोली, "खुदा कसम, तुम झूठ बोल रहे हो। तुम मेरी हंसी उड़ाना चाहते हो, इसलिए मुझसे कुछ छिपा रहे हो। लेकिन याद रखो अगर तुमने बताया नहीं कि तुम किस बात पर हंसे थे तो मैं तुम्हें अभी छोड़कर चली जाऊंगी और फिर कभी तुम्हारे पास नहीं आऊंगी।" यह कहकर वह एक कोने में बैठ गई और रोने लगी।

अमीर बोला, "भला यह सब रोना-धोना किसलिए है ? मैं खुदा के नाम पर तुमसे कहता हूं कि अपनी ज़िद छोड़ दो और इसके बारे में मुझसे कोई सवाल न पूछो !"

"नहीं, नहीं, आज तुम्हें बताना ही पड़ेगा कि तुम हंस क्यों रहे हो ?"

अमीर बोला, "तुम तो जानती हो कि खुदा ने मुझे जानवरों और चिड़ियों की बोली समझने की कूवत दी है। लेकिन इसके साथ ही उसने मुझे मना कर दिया है कि मैं जो कुछ सुनूं उसे किसी और को न बताऊं वरना मेरी जान चली जाएगी।"

लेकिन उसकी बीवी नहीं मानी। वह अपनी बात पर ही अड़ी रही। वह जानना चाहती थी कि आखिर बैल और गधे में ऐसी कौन-सी बात हुई जिससे शेख इस तरह हंस पड़ा। उसने अपनी ज़िद नहीं छोड़ी। वह बराबर रोती ही रही। जब अमीर ने देखा कि वह बिना सब कुछ जाने चैन नहीं लेगी तो अन्त में मजबूर होकर उसने कहा, "खैर, यही बात है तो अपने मां-बाप को बुलवा लो और पड़ोसियों को भी बुलवा लो, फिर सबके सामने मैं कह दूंगा !"

इसके बाद अमीर ने शहर के काज़ी को बुलवा भेजा, क्योंकि वह अपनी वसीयत भी लिखना चाहता था और मरने के बाद अपनी बीवी के नाम बहुत-सा धन छोड़ना चाहता था। वह उसे

बहुत चाहता था, क्योंकि वह उसके बच्चों की मां थी।

जब थोड़ी देर में सब लोग इकट्ठे हो गए तो एक बार फिर उसने उन लोगों को सारा किस्सा बताया और कहा, "तुम लोग मिलकर मेरी बीवी को समझा दो ताकि वह अपना हठ छोड़ दे!"

लोगों ने उस मूर्ख स्त्री को समझाना शुरू किया,"अपनी ज़िद छोड़ दो, तुम्हें मालूम ही है कि अगर अमीर तुम्हें सब कुछ बता देगा तो उसकी मौत हो जाएगी। वह तुम्हारे बच्चों का पिता है। क्या तुम्हें उसका इतना भी ख्याल नहीं है?"

लेकिन उसने अपनी ज़िद नहीं छोड़ी। वह बोली, "चाहे जो हो जाए लेकिन इसे बताना ही पड़ेगा कि यह क्यों हंस रहा था।"

उसकी यह ज़िद देखकर लोगों ने उससे बोलना छोड़ दिया। लेकिन इसका भी उस पर कोई असर नहीं पड़ा। अन्त में अमीर ने सोचा कि इसे बताना ही पड़ेगा और इस तरह अपनी जान से हाथ धोना ही पड़ेगा। वह उठा और मुंह धोने के लिए बाहर आया।

उसने कुछ मुर्गियां पाल रखी थीं। जब वह मुर्गियों के दरबे के पास पहुंचा तो उसने कुत्ते को मुर्गे से कहता सुना, "मुर्गे भाई, जानते हो हमारा मालिक अब मरने जा रहा है! उसकी बीवी ज़िद पर उतर आई है। वह चाहती है कि मालिक ने बैल और गधे को आपस में जो कुछ कहते सुना है वह उसे भी बता दे; लेकिन अगर मालिक ने यह किया तो उसकी जान चली जाएगी, क्योंकि वह जानवरों की बोली खुद तो समझ सकता है, लेकिन अगर इसके बारे में किसी दूसरे को बताएगा तो उसकी मौत हो जाएगी।"

मुर्गा बोला, "हमारा मालिक भी कुछ नासमझ मालूम होता है। उसकी एक बीवी है और उससे वह परेशान रहता है और अब उसकी ज़िद के आगे अपनी जान देने चला है। मुझे देखो, पचास मुर्गियां मेरी बीवियां हैं। इनमें से कभी कोई नाराज़ होती है और

कभी कोई खुश रहती है। जो मुझसे नाराज़ होती है, उसे मैं खाने को नहीं देता। अगर वह कहीं दाना चुगने जाती है तो वहां से मैं उसे भगा देता हूं। बस दो-तीन दिन जहां भूखी रही कि अक्ल दुरुस्त हो जाती है। इस तरह, मैं पचास मुर्गियों को काबू में रखता हूं, लेकिन मेरा मालिक एक मूर्ख स्त्री को भी काबू में नहीं रख पाता!"

कुत्ते ने पूछा, "तुम्हारे ख्याल में हमारे मालिक को क्या करना चाहिए?"

"करना क्या चाहिए, बस उस झगड़ालू औरत को दो दिन खाना न दे; वह अपने-आप रास्ते पर आ जाएगी और सवाल पूछना छोड़ देगी। भला इतनी-सी बात के लिए उसे अपनी जान देनी चाहिए?"

अमीर यह सब सुन रहा था। वह फौरन अन्दर गया। उसने अपनी बीवी से कहा, "ज़रा तुम अपने कमरे में चलो। वहां मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा।"

वह खुशी-खुशी उठी और कमरे में चली गई। जैसे ही वह अन्दर गई, अमीर ने बाहर से दरवाज़ा बन्द कर दिया और कहा, "यही मेरा जवाब है। अब तुम यहीं बन्द रहो। कल तुम्हें खाना भी नहीं मिलेगा!" यह कहकर अमीर लौट आया।

पहले दिन तो उसकी स्त्री मुंह फुलाए अपने कमरे में बैठी रही। लेकिन जब भूख बढ़ने लगी, तब वह परेशान होने लगी। उस दिन उसे खाना मिला ही नहीं। दूसरे दिन भी दोपहर तक उसे कुछ नहीं मिला। उसकी हालत खराब हो गई। वह रोने लगी और अमीर से माफी मांगने लगी। लेकिन अमीर ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। तीसरे दिन तक उस स्त्री को अपनी गलती की पूरी सज़ा मिल गई। मारे भूख के उसकी हालत खराब थी।

अंत में अमीर को उस पर दया आ गई। वह बोला, "वादा करो कि तुम आगे फिर कभी इस तरह कि ज़िद नहीं करोगी,

तभी तुम्हें छोड़ा जाएगा ।"

उसकी स्त्री ने रोते हुए वादा किया और माफी मांगी ।

यह सुनकर अमीर बहुत खुश हुआ । घर में भी सब लोग बड़े खुश हुए । उस स्त्री को छोड़ दिया गया । तीन दिन बाद खाना पाकर वह भूखों की तरह उस पर टूट पड़ी । उसने कसम खाई कि अब वह फिर कभी अमीर को तंग नहीं करेगी और ज़िद करना छोड़ देगी ।

इस तरह अमीर को जानवरों से शिक्षा मिली और वह आराम से रहने लगा ।



दो ठग और एक थैला

खलीफा हारूं-अल-रशीद को रात में नींद नहीं आ रही थी। बार-बार करवट बदलते थे, लेकिन आंख लगती ही नहीं थी। अन्त में उन्होंने अपने वज़ीर को बुलाया और उससे कहा, "मियां जाफर, आज कुछ तबीयत नहीं लग रही है। नींद आने का नाम नहीं लेती है। ज़रा कुछ ऐसा करो कि दिल बहल जाए और मन को तसल्ली मिले।"

जाफर अदब के साथ बोला, "हुज़ूर, बस आपके हुक्म की देर है। मेरा एक दोस्त है। उसका नाम है अली। उसको ऐसे खूबसूरत किस्से आते हैं कि जब वह उन्हें सुनाने बैठता है तो सारी बेचैनी काफ़ूर हो जाती है और दिल इस कदर बहलता है कि कुछ न पूछिए। अगर आप हुक्म दें तो…"

"अजी, इसमें हुक्म की क्या बात है? फौरन उसको हमारे सामने पेश किया जाए।"

खलीफा का वज़ीर गया और थोड़ी ही देर में अपने दोस्त अली को लिवा लाया। अली ने आकर अदब से खलीफा को सलाम किया। खलीफा बोले, "सुनो भई, कहते हैं कि तुम बड़े अच्छे किस्से जानते हो। आज हमारी तबीयत नहीं लग रही है। कोई ऐसा किस्सा सुनाओ कि दिल बहल जाए और तबीयत ज़रा हल्की हो जाए।"

अली बोला, "हुज़ूर, अगर आप कहें तो मैं आपको एक ऐसी बात सुनाऊं, जिसे मैंने खुद अपनी आंखों से देखा है और कानों से सुना है।"

खलीफा बोले, "जो चाहे सुनाओ, लेकिन बात ज़रा दिलचस्प

होनी चाहिए।"

खलीफा का हुक्म पाकर अली ने कहना शुरू किया—

हुज़ूर, तो सुनिए। एक बार की बात है, मैं बगदाद शहर को छोड़कर ज़रा सफर के लिए निकला। मेरे साथ एक लड़का था, जो मेरे साथ एक चमड़े का थैला लेकर चलता था।

चलते-चलते हम दोनों एक शहर में पहुंचे। यहां मुझे बाज़ार में दो-एक खास चीज़ें खरीदनी थीं। इसलिए मैं बाज़ार में इधर-उधर घूमने लगा। इतने में एक तुर्क जाति का चोर मुझ-पर टूट पड़ा और मेरा थैला छीनकर बोला, "यह थैला मेरा है और इसके अन्दर का सारा सामान भी मेरा है। तुम अब चुपचाप बाज़ार से चले जाओ वरना तुम्हारी खैर नहीं।"

अजीब तमाशा था। पहले तो मेरी समझ में नहीं आया कि यह भी क्या मज़ाक है? लेकिन फिर मुझे मालूम हो गया कि वह तो सचमुच मेरा थैला छीनना चाहता था। मैं मदद के लिए चिल्लाने लगा। धीरे-धीरे लोग इकट्ठे हो गए। मैंने उनसे कहा, "देखो लोगो, यह चोर मुझ गरीब परदेसी को लूटना चाहता है। तुम लोग मेरी मदद करो।" लेकिन उधर चोर भी चिल्ला रहा था, "यह परदेसी नहीं है, एक उचक्का है। मेरा थैला छीनकर भागा जा रहा है। यह सामान इसका नहीं, मेरा है।" लोगों की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? मैं खुद भी हैरान था कि अब क्या किया जाए। मैंने लोगों को बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने मेरी बात पर यकीन नहीं किया। इतने में एक आदमी ने कहा कि तुम दोनों काज़ी के पास चलो। वहीं इन्साफ होगा। लोग हम दोनों को घेरकर काज़ी के पास ले गए।

सारा किस्सा सुनकर काज़ी बोला, "तुम इस शहर में क्यों आए? और इस झगड़े की वजह क्या है?"

मैंने कहा, "हुज़ूर, मैं एक गरीब परदेसी हूं। यूं ही घूमने के लिए सफर पर निकल पड़ा हूं। आप इन्साफ कीजिए। हम

दोनों के बीच एक झगड़ा हो गया है।"

काज़ी ने पूछा, "लेकिन यह बताओ कि मामला क्या है ? तुममें से पहले कौन शिकायत करना चाहता है ?"

इस पर वह तुर्क उछलकर आगे आया और बोला, "काज़ी हुज़ूर, बात यह है कि यह थैला मेरा है और इसके अन्दर का सारा सामान भी मेरा है। मेरा यह थैला गुम हो गया था। मैंने आज इसे इस आदमी के पास देखा है। मेरा थैला दिलवा दीजिए।"

काज़ी ने पूछा, "तुम्हारा यह थैला कब गुम हुआ था ?"

"हुज़ूर कल ही तो, इसके गुम हो जाने का मुझे इतना अफ़-सोस था कि रात-भर इसके गम में मुझे नींद नहीं आई।"

काज़ी बोला, "अगर यह थैला तुम्हारा है तो बताओ इसमें क्या है ?"

तुर्क ने कहना शुरू किया, "हुज़ूर, अभी बताता हूं। मेरे इस थैले में कुछ कपड़े-लत्ते थे। एक कपड़े में मैंने सोने के दो प्याले लपेट रखे थे। इसके अलावा इसमें चांदी की तश्तरियां थीं और दो खेमे थे, एक पीतल का चिराग था। एक अंगीठी और दो पानी की मश्कें थीं। इसके अलावा इसमें एक बिल्ली, दो कुत्ते, दो कुर्सियां, एक लम्बा अंगरखा और एक गाय जिसके साथ दो बछड़े भी थे। इसके अलावा इसमें एक बकरी, दो भेड़ें, चार मेमने, एक ऊंट और दो ऊंटनियां, एक शेरनी और दो शेर, एक मादा भालू और एक बड़ी चारपाई भी थी। इसके अलावा इसमें दो ऊपर के कमरे और एक रसोईघर भी था, जिसमें दो दरवाज़े थे। इसके अलावा इसमें मेरे कई हम वतन तुर्क थे, जो हुज़ूर को बताएंगे कि यह मेरा ही थैला है।"

काज़ी चुपचाप यह सब सुनता रहा और फिर मेरी तरफ मुड़कर बोला, "और परदेसी, इस थैले के बारे में तुम्हें क्या कहना है ?"

मैंने आगे आकर कहा, "हुज़ूर इन्साफ कीजिए, खुदा आपका भला करे ! मेरे इस थैले में और कुछ नहीं सिर्फ एक छोटा-सा

मकान था और एक दूसरा मकान भी था जिसमें कोई दरवाज़ा नहीं था, लेकिन उसमें एक कुत्ते के रहने की जगह थी, और इसमें एक लड़कों का मदरसा भी था जिसमें लड़के अक्सर खेला करते थे। इसके अलावा इसमें कुछ खेमे थे और बगदाद शहर था। एक लुहार की दुकान थी। मछली मारने का एक बड़ा-सा जाल था। कुछ लाठियां और पत्थर भी थे। इसके अलावा इसमें 1003 कानून दां रहते थे। हुज़ूर, वे आपको बताएंगे कि यह मेरा ही थैला है।"

जब तुर्क ने मेरी यह बात सुनी तो उसका चेहरा उतर गया, लेकिन उसने भी हिम्मत नहीं हारी, और कहा, "हुज़ूर, दुनिया



जानती है कि यह थैला मेरा है और दुनिया यह भी जानती है कि इसमें क्या-क्या था ? मैं आपको अभी सच-सच सब कुछ बताता हूं —देखिए हुज़ूर, इस थैले में इस वक्त कुछ किताबें और कुछ चिड़ियां हैं, और कुछ जंगली जानवर हैं और कुछ गाने और नाचने वाले आदमी हैं। इसके अलावा हुज़ूर, इसमें एक बूढ़ा घोड़ा है। जिसके साथ दो बछड़े हैं। और इसमें एक गांव है जिसमें दो भिखारनें रहती हैं। इसके साथ ही इसमें सोने की दो अंगूठियां हैं। एक बड़ा चाकू है, और एक मछली मारने वाली नाव है, जिसमें चार मछलियां रखी हैं। इसके अलावा इसमें दो लंगड़े हैं जिनके साथ दो हकीम रहते हैं, और इसमें तीन काज़ी रहते हैं, हुज़ूर वे काज़ी आपको बताएंगे कि यह मेरा थैला है।"

यह सुनकर काज़ी ने मुझसे पूछा, "और अली, तुम्हें क्या कहना है ?"

मुझे उस तुर्क की बकवास पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। मैंने काज़ी से कहा, "हुज़ूर, आप इन्साफ-पसन्द हैं। मैं आपके आगे झूठ नहीं बोलूंगा। असल बात यह है कि मेरे इस थैले में एक चारपाई और दो तलवारें हैं, एक हज़ार मुर्गियां हैं, एक खेत है, एक बगीचा है जिसमें खूब फल और फूल लगे हैं। उसमें कुछ नाचने वालियां रहती हैं। इसमें दो शादियां हो रही हैं। इसमें कुछ सिपाही हैं और एक सड़क है। इसमें तोपें हैं और एक बड़ी लड़ाई चल रही है। कुछ झण्डे हैं और एक कैदखाने में कुछ कैदी हैं। इसमें पांच अबसीनिया की औरतें, तीन हिन्दुस्तानी, चार अरब, बीस यूनानी और अस्सी तुर्क औरतें हैं। इसमें नील नदी बहती है। जिस पर कुछ पुल बने हुए हैं। पुलों पर घोड़े दौड़ रहे हैं। इसमें कुछ मस्जिदें हैं। इसके अलावा, इसमें काहिरा और सिकन्दरियां के शहर बन्द हैं और हुज़ूर, इसमें सुलेमान की राजधानी है, इसके अलावा, इसमें एक हज़ार एक उस्तरे हैं जो उस काज़ी का सिर मूंड देंगे, जो यह इन्साफ करेगा कि यह मेरा थैला नहीं है।"

काज़ी जब यह सुन चुका तो कुछ देर तक चुपचाप सोचता रहा और फिर बोला, "तुम दोनों बहुत बड़े ठग और बदमाश मालूम होते हो, तुम काज़ियों का मज़ाक बनाते हो और उनके इन्साफ का तुम्हें कोई डर नहीं है। इस समय तुम दोनों ने जो कुछ कहा, ऐसा अजीबो-गरीब बयान आज तक किसी ने अपनी जीभ से न कहा होगा और न किसी के कानों ने सुना होगा। चीन से लेकर हिन्दुस्तान तक और हिन्दुस्तान से फारस और अरब तक और सारी दुनिया में आज तक किसी ने ऐसी गप्प नहीं सुनी होगी जैसी तुम दोनों ने अभी सुनाई है। तुम लोगों का क्या मतलब है? क्या तुम्हारे इस थैले में सारी दुनिया बन्द है? दुनिया के सारे समन्दर और जंगल और पहाड़ और जो कुछ भी तुम कहते हो वह सब बन्द हैं? अच्छा, ज़रा इस थैले का मुंह खोलो और दिखाओ कि इसमें क्या है?"

तुर्क ने थैला खोला तो उसमें से रोटी का सूखा हुआ टुकड़ा निकला। यह देखकर मैं फौरन भाग खड़ा हुआ। इतनी तेज़ी से भागा कि मुझे कोई पकड़ नहीं सका।

लेकिन उन्होंने उस तुर्क को पकड़ लिया और उसकी खूब पिटाई की और उसे कैदखाने में ठूंस दिया।

बस हुजूर यही मेरा किस्सा है।—यह कहकर अली सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

खलीफा को यह किस्सा बड़ा पसन्द आया। उन्होंने वज़ीर को हुक्म दिया, "इसको एक हज़ार मोहरें दी जाएं।" यह हुक्म कर हारूं-अल-रशीद लेट गए और उन्हें नींद आ गई।



बत्तख और मोर की कहानी

पुराने ज़माने की बात है, एक टापू में एक बड़ा भारी जंगल था। उसमें एक पेड़ पर एक मोर अपनी मोरनी के साथ रहता था।

उस जंगल में तरह-तरह के जंगली जानवर—बाघ, शेर, चीते हाथी, घोड़े वगैरह सभी रहते थे। इसलिए मोर रात को किसी पेड़ पर रहता था और दिन में दाने की खोज में निकलता था।

एक दिन मोर मोरनी के साथ एक पेड़ के नीचे टहल रहा था। इतने में एक बत्तख उधर से दौड़ती हुई आ निकली। वह बुरी तरह डरी हुई थी और बड़े ज़ोर-ज़ोर से हांफ रही थी। मोर के पूछने पर उसने बताया, "मैं तो इन आदमज़ादों, इन्सानों से बहुत परेशान हूं। तुम लोग भी उनसे बचकर रहना!"

मोर ने उसको धीरज बंधाते हुए कहा, "इस तरह घबराओ मत। यहां किसी बात का डर नहीं है। यहां तुम आराम से रहो इस टापू पर कोई मनुष्य पहुंच ही नहीं सकता है, आसपास इतना लम्बा-चौड़ा समुद्र फैला है। खैर, यह तो बताओ कि तुम मनुष्य से कैसे परेशान हुई?"

बत्तख बोली, "इसी टापू पर मैंने अपनी इतनी ज़िन्दगी गुज़ार दी है। आज तक मुझे किसी बात का डर नहीं था। मैं आराम से रहती थी लेकिन कल रात मैंने सपने में एक आदमी देखा। वह मुझसे बातें करता रहा और मैं भी उससे बातें करती रही। इतने में न मालूम कहां से एक आवाज़ आई बत्तखरानी! इस आदम के बेटे आदमी से होशियार रहना। इससे बढ़कर चालक जानवर इस संसार में कोई नहीं है। यह अपने जाल में मछलियां फांस लेता है और पत्थरों से चिड़ियों और जानवरों

को मार गिराता है। यहां तक कि यह हाथी जैसे जानवर को भी रास्ते में गड्ढे खोदकर फंसा लेता है। इससे किसी का भी बचना मुश्किल है !

बस, यह सुनते ही मेरी नींद उड़ गई। उस दिन से आज तक मुझे चैन नहीं है। आदमी का डर मुझे रात-दिन सताता रहता है। उस पहाड़ी के पास दाना चुग रही थी। इतने मे एक शेर का बच्चा उधर आ निकला। मुझे देखकर वह बड़ा खुश हुआ, और बोला, "सुनो-सुनो, तुम तो बड़ी अच्छी लगती हो ! क्या नाम है तुम्हारा ?"

मैंने कहा, "मेरा नाम बत्तखरानी है और तुम्हारा नाम क्या है ? तुम तो शेर के बच्चे मालूम पड़ते हो ! यहां क्या कर रहे हो तुम ?"

उससे इसी तरह बातचीत होती रही। थोड़ी देर बाद मैंने उसे बताया कि आदमी से मुझे कितना डर है। मैंने शेर से कहा कि तुम आदमी को मार डालो क्योंकि वह हम सब के लिए बहुत खतरनाक है। वह हम सबका शत्रु है। उसे ज़िन्दा छोड़ना ठीक नहीं है। इस पर शेर उठ खड़ा हुआ और आदमी की खोज में चल पड़ा। मैं भी उसके साथ-साथ गई। हम लोग कुछ ही दूर गए होंगे कि इतने में रास्ते में हमने देखा कि एक जगह बहुत धूल उड़ रही है। हम लोग कुछ चौंके। लेकिन पास जाने पर देखा कि एक गधा कभी तो तेज़ी से दौड़ता था और फिर रुक-रुककर ज़मीन पर लोटने लगता और फिर उठकर तेज़ो से दौड़ने लगता था। शेर ने पास जाकर डाटते हुए कहा, "क्यों रे मूर्ख, यह क्या कर रहा है ! तू कौन है और यहां क्या करने आया है ?"

गधा बोला, "ओ जंगल के राजा, मैं एक गधा हूं। मैं इन्सान से डरकर तुम्हारे राज्य में शरण लेने के लिए भागा आ रहा हूं।"

शेर ने पूछा, "लेकिन आखिर तुम्हें डर किस बात का है ? क्या वह तुम्हें मार डालेगा ?"

गधा बोला, "नहीं, इसका मुझे डर नहीं है। लेकिन वह मुझसे

काम बहुत लेता है, वह मुझ पर सामान लादता है, और सवारी करता है। उसने चमड़े की एक काठी बना रखी है, जिसे वह मेरी पीठ पर कस देता है और मेरे मुंह में लगाम लगा देता है। उसके पास चाबुक नाम की एक चीज़ होती है, जिससे अक्सर वह मुझे पीटता रहता है। जब कोई गधा बूढ़ा हो जाता है तो उससे पानी ढोने का काम लिया जाता है। इसकी पीठ पर बड़ी-बड़ी मशकें लाद दी जाती हैं। जब कोई गधा मर जाता है तो उसे कूड़े के ढेर पर फेंक देता है, जहां सियार और कुत्ते उसका मांस खा जाते हैं।"

गधा अपना किस्सा सुना ही रहा था कि इतने में फिर हमने धूल उड़ती हुई देखी। दूर इस बार काला घोड़ा मारे डर के चिल्लाता हुआ हमारी ओर ही भागा चला आ रहा था। पास आने पर शेर ने उससे भी पूछा तो वह बोला, "मैं भी आदम के बेटे आदमी के डर से भाग रहा हूं!"

शेर को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, "यह तुम क्या कह रहे हो? तुम्हारे जैसा लम्बे-चौड़े डीलडौल वाला जानवर इस तरह आदमी से डरकर भागता है? अगर तुम एक लात भी उसे मार दो, तो उसकी जान निकल सकती है। भला तुम्हें उससे डरने की क्या ज़रूरत है!"

यह सुनकर घोड़ा हंस पड़ा और बोला, "ओ जंगल के बादशाह, आदमी के सामने किसी की नहीं चल सकती। वह इतना मूर्ख नहीं है कि घोड़े के लात मारने से मर जाए। वह बहुत चालाक है। वह मेरे चारों पैरों को रस्सी से बांध देता है। मुझ पर जीन कसता है। मुंह में लगाम डालकर अपने वश में कर लेता है। वह मुझे अपनी गाड़ियों में जोतता है। ज़िन्दगी-भर पीट-पीटकर मुझसे काम लेता है और मर जाने पर मेरी खाल उधड़वा लेता है।"

यह सुनकर शेर को बड़ा गुस्सा आया। वह बोला "इतना खराब होता है आदमी! अच्छा बताओ वह कहां है? वह मुझे मिल जाए तो मैं अभी उसे एक झपट्टे में चिथड़े-चिथड़े कर डालूं!"

इतने में फिर धूल उड़ती दिखाई दी और एक ऊंट ज़ोर-ज़ोर

से बलबलाता हुआ अपने लम्बे-लम्बे पैरों को झाड़ता हुआ उधर आ निकला। शेर ने सोचा कि शायद यही आदमी है। वह उस-पर कूदने ही वाला था कि मैंने शेर को रोककर कहा, "नहीं, नहीं, यह तो एक ऊंट है! इतने में ऊंट पास आ गया और शेर से बोला, "ओ जंगल के बादशाह, आदमियों ने मुझे तंग कर रखा है। मैं आदमी के डर से भागा आ रहा हूं!"

शेर ने कहा, "क्या, भला तुम्हारे जैसा लम्बी टांगों वाला जानवर भी आदमी से डरता है?"

ऊंट बोला, "आदमी के सामने मेरी क्या बिसात है! यह बड़ा चालाक जानवर होता है। मेरे लिए तो आदमी जैसे मौत का ही दूसरा नाम है। वह मेरी नाक में नकेल डालकर मुझे अपने काबू



में कर लेता है। यहां तक कि उसके छोटे-छोटे बच्चे भी नकेल पकड़कर मुझे इधर-उधर घुमाते रहते हैं। मेरी पीठ पर वह वज़नी से वज़नी सामान रख देता है और मुझे लम्बे सफर पर ले जाता है। रात-दिन मुझ से मेहनत करवाता है और जब काम करते-करते कोई ऊंट मर जाता है तो वह उसकी खाल खिंचवा लेता है और उसका मांस कुत्तों को खिला देता है। इस समय भी वह मेरे पीछे पड़ा है। उससे बचने के लिए ही मैं यहां भागा आया हूं। मुझे कोई ऐसी जगह बता दो जहां मैं आदमी से अपनी जान बचा सकूं।"

शेर बोला, "डरो मत, अब तुम मेरे राज्य में हो! यहां आराम से रहो। यहां आदमी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मैंने आज तक उस जानवर को देखा नहीं, लेकिन जैसा कि तुम कह रहे हो, वह तुम्हारे पीछे-पीछे ही आ रहा है, तो उसे आने दो। देखना कितनी आसानी से मैं उसे अपने नाखूनों से फाड़ डालता हूं। मैं उसकी बोटी-बोटी चबा जाऊंगा। मैं जानवरों का बादशाह हूं आखिर आदमी भी तो एक जानवर ही है। भला वह मेरा मुकाबला कैसे कर सकता है?"

जब शेर इस तरह ऊंट से बातें कर रहा था तो इतने में दूर एक दुबला, पतला और बूढ़ा आदमी दिखाई दिया। वह उधर ही आ रहा था। उसके कंधे पर एक थैला था, जिसमें तरह-तरह के औज़ार भरे थे। अपने सिर पर वह लकड़ी के आठ तख्ते लादे हुए था। वह कोई बढ़ई था।

मैं तो उस आदमी को देख मारे डर के थरथर कांपने लगी और पंख फड़फड़ाकर सीधे शेर के पीछे जा छिपी। वहां खड़े हुए दूसरे जानवर भी घबरा उठे। लेकिन शेर ज़ोर से दहाड़ा और बढ़ई से मिलने के लिए आगे बढ़ा।

शेर को अपनी ओर आता देखकर बढ़ई रुक गया। वह मुस्कराने की कोशिश करते हुए बोला, "ओ जंगल के राजा, भगवान तुम्हारा भला करे! तुम निर्बलों के सहायक हो। मैं भी

तुम्हारी शरण में इसलिए आया हूं कि तुम मेरी मदद करो, जिस तरह तुम अपनी शरण में आए दूसरे जानवरों की मदद करते हो।"

शेर ने आश्चर्य से कहा, "घबराओ मत, मैं तुम्हारी मदद करूंगा। लेकिन पहले यह तो बताओ कि तुम कौन हो और तुम्हें किस बात का डर है ?"

वह बूढ़ा बोला, "मैं एक बढ़ई हूं, और एक आदमी का सताया हुआ हूं। वह मेरे पीछे पड़ा हुआ है और कल तक वह मेरा पीछा करता हुआ यहां आ पहुंचेगा।"

शेर ने कहा, "मैं देखूंगा कि कौन मेरे राज्य में बिना मुझसे पूछे घुसता है। मैं उसको फाड़ खाऊंगा। आज रात-भर मैं यहीं उसकी इन्तज़ार में बैठा रहूंगा। फिर उसने बढ़ई से पूछा, "लेकिन यह तो बताओ कि तुम यहां कहां रहोगे ? तुम दूसरे जानवरों के साथ रह भी नहीं सकते, क्योंकि तुम बहुत दुबले-पतले और कमज़ोर हो।"

इस पर बढ़ई बोला, "इस समय तो मैं लकड़बग्घ साहब के पास जा रहा हूं, क्योंकि जब उन्होंने सुना कि आदम का बेटा आदमी इस जंगल में आने वाला है तो वे डर गए और उन्होंने मुझे बुला भेजा ताकि मैं उनके लिए एक मकान बना दूं जिसमें वे हिफाजत से रह सकें।"

यह सुनकर शेर बोला, "अच्छा, ऐसी बात है तो पहले तुम्हें मेरा काम करना पड़ेगा। पहले तुम मेरे लिए एक मकान बना दो। उसके बाद ही लकड़बग्घे के पास जाओ।"

लेकिन बढ़ई इसके लिए राज़ी नहीं हुआ। वह कहने लगा, "पहले मैं लकड़बग्घे का काम करूंगा फिर मौका मिला तो तुम्हारा काम करूंगा।" इस पर शेर को बड़ा गुस्सा आ गया। वह दहाड़-कर उछला और उसने अपने पंजे से बढ़ई को एक हल्का-सा धक्का दिया। बढ़ई संभल नहीं सका और लड़खड़ाकर गिर पड़ा। यह देखकर शेर को हंसी आ गई। उसने कहा, "सचमुच तुम बड़े कमज़ोर मालूम होते हो। इसीलिए तुम आदमी से डरते हो लेकिन

तुम्हें पहले मेरे लिए एक मकान बनाना ही होगा।"

इस बार बढ़ई राज़ी हो गया। वह फौरन अपने काम में लग गया। उसने तख़्तों को जोड़कर एक डिब्बेनुमा घेरा बना दिया और उसका दरवाज़ा खुला ही छोड़ दिया। फिर शेर से कहा, "तुम इसके अन्दर चले जाओ, ताकि मैं तुम्हारा नाप लेकर तुम्हारे लायक मकान बना दूं।"

शेर उस घेरे के अन्दर चला गया। लेकिन उसने अपनी पूंछ का थोड़ा हिस्सा बाहर छोड़ दिया। बढ़ई ने उसकी पूंछ भी अन्दर करते हुए कहा, "ज़रा देर ठहरो! मैं नाप लूं कि इस मकान में तुम्हारी पूंछ के लिए जगह है या नहीं। शेर ने अपनी पूंछ भी अन्दर कर ली। बढ़ई ने फौरन डिब्बे का दरवाज़ा बन्द कर दिया और उसमें मज़बूती से कीलें जड़ दीं।

अन्दर से शेर ने चिल्लाकर कहा, "अरे भाई बढ़ई ज़रा सुनो! मेरा तो यहां दम घुटता है। यह मकान मेरे लिए बहुत छोटा है। मुझे बाहर आने दो।"

बढ़ई बोला, "आराम से अन्दर ही रहो। बाहर आने का खयाल भी न लाओ। जो हो चुका सो हो चुका। अब तुम इसी में बन्द रहोगे।"

यह सुनकर शेर को बड़ा गुस्सा आया। वह डिब्बे में ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ने लगा और बोला, "यह क्या मज़ाक है! और यह तुम बोल किस तरह रहे हो। जानते नहीं कि तुम जंगल के बादशाह से बात कर रहे हो?

बढ़ई हंसकर बोला, "ओ जानवरों में सबसे मूर्ख और घमंडी जानवर, तुम आदमी से लड़ने चले थे न! अब तुम्हारा यह सपना कभी पूरा नहीं होगा।"

तो मोर भाई, इस तरह उस चालाक आदमी ने हमारे जंगल के राजा को भी कैद कर लिया। शेर चीखता-चिल्लाता रहा, लेकिन बढ़ई ने उसकी एक न सुनी। उसने डिब्बे में एक छेद किया और उसके अन्दर सूखी लकड़ियां डालनी शुरू कीं। जब डिब्बा

लकड़ियों से भर गया तो उसमें उसने आग लगा दी। थोड़ी ही देर में हमारे जंगल का राजा शेर जलकर राख हो गया।

मैं एक पेड़ की ओट में खड़ी यह सब देख रही थी। बाकी सारे जानवर वहां से पहले ही भाग चुके थे। जब शेर जल गया, तो मैं वहां से जान बचाकर भागी और दो दिन से भाग रही हूं।

बत्तख का यह किस्सा सुनकर मोर को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, "बत्तख बहन, यह तुम्हारी कहानी सचमुच बड़ी डरावनी है। लेकिन तुम यहां आराम से रहो। यहां आदमी के आने का कोई डर नहीं हैं, क्योंकि इस टापू पर आज तक कोई आदमी नहीं आया और न आगे ही कोई कभी आएगा।"

बत्तख ने कहा, "ठीक है, मैं यहीं रहूंगी। तुम्हारी इस कृपा के लिए मैं बड़ी आभारी हूं। लेकिन जो हमारे भाग्य में लिखा है,उससे कभी छुटकारा नहीं। उससे कोई किसी को बचा नहीं सकता।"

इस तरह दोनों में दोस्ती हो गई। अब मोर, मोरनी और बत्तख साथ-साथ घूमते थे और जो कुछ मिलता था उसे बांटकर खाते थे। इस तरह आराम से उनके दिन बीतने लगे।

कुछ दिनों बाद एक जहाज़ समुद्र में रास्ता भूलकर उस टापू के किनारे आ लगा। जहाज़ के मल्लाह खाने की तलाश में टापू में घूमने लगे। उन्होंने मोर और बत्तख को देखा तो उनके पीछे दौड़े। मोर और मोरनी तो उड़कर पेड़ की सबसे ऊंची डाल पर जा बैठे लेकिन बत्तख बेचारी उड़ नहीं सकती थी। वह वहीं दौड़ने लगी। लेकिन भला वह कब तक दौड़ती! मल्लाहों ने उसे पकड़ लिया और अपने कंधे पर लटकाकर जहाज़ में ले गए।

मोर ने जब यह देखा तो उसकी आंखों मे आंसू आ गए। वह बोला,"आखिर दुश्मन आकर उसे पकड़ ही ले गए। खैर, जो भाग्य में लिखा होता है, वह होकर ही रहता है। उससे बच पाना मुश्किल है। ऐसे मौके पर किसी की मदद भी काम नहीं आती।"

यह कहकर मोर ने एक आह भरी। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।



जादू का दीपक

एक समय की बात है, चीन देश के एक बहुत बड़े प्रान्त की राजधानी में एक दर्ज़ी रहता था। उसका नाम था मुस्तफा। मुस्तफा बहुत गरीब था। दिन-भर कड़ी मेहनत करके किसी तरह दो पैसे कमाता था। काम की वजह से उसे इतना समय भी नहीं मिलता था कि वह अपने घर के लोगों की देखभाल कर सके। घर में उसकी बीवी थी और एक लड़का था, जिसका नाम था अलादीन। अलादीन वैसे बहुत अच्छा लड़का था, लेकिन वह हमेशा मनमानी करता था; किसी की सुनता नहीं था। इसलिए मुस्तफा उससे कोई काम नहीं ले पाता था।

अलादीन की मनमानी से उसके मां-बाप परेशान रहते थे। उसका बाप अक्सर उसे डांटता, फटकारता और पीटता रहता था। लेकिन अलादीन पर कोई असर नहीं होता था। वह अपनी हरकत से बाज़ नहीं आता था। उसके बाप मुस्तफा को दिन-रात यह चिन्ता लगी रहती थी कि अलादीन का आगे क्या होगा, वह न कोई काम सीखता है न किसी काम में मन लगाता है। इसी फिक्र में बेचारा मुस्तफा बीमार पड़ गया और अन्त में एक दिन चल बसा। बाप के मरने पर अलादीन की मां घर का काम-काज देखने लगी। उसे अपना और अपने बेटे का खर्च चलाना पड़ता था। किसी तरह दिन बीतने लगे। धीरे-धीरे अलादीन पन्द्रह साल का हुआ।

एक दिन की बात है, अलादीन अपने आवारा दोस्तों के साथ सड़क पर खेल रहा था। इतने में उधर से एक राहगीर गुज़रा। अचानक वह रुक गया और अलादीन को खूब गौर से देखने लगा।

यह आदमी एक जादूगर था और अफ्रीका के जादूगर के नाम से मशहूर था। अलादीन को देखकर उसने समझ लिया कि यह एक आवारा लड़का है और मेरे काम में मदद कर सकेगा। वह अलादीन को एक तरफ बुलाकर प्रेम से बातें करने लगा। उसने झूठ-मूठ कह दिया कि मैं तुम्हारा चाचा हूं और तुम्हारा बाप मुस्तफा मेरा भाई था। उसने अलादीन को कुछ पैसे भी दिए।

दूसरे दिन वह आदमी फिर आया। इस बार वह बहुत-से मेवे-मिठाई और शराब वगैरह भी साथ लाया था। वह अलादीन के साथ उसकी मां से मिलने के लिए उसके घर जा पहुंचा। उसने अलादीन की मां के सामने अलादीन की बड़ी तारीफ की और कहा, "यह बहुत अच्छा लड़का है। मैं चाहता हूं कि इसको और अच्छा बना दूं, ताकि आगे चलकर तुम्हारे काम आ सके।" उसने अलादीन को अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने को दिए और उसे एक दुकान में काम दिलाने का वादा किया।

पहले तो अलादीन की मां को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ कि अफ्रीकी जादूगर अलादीन का असली चाचा है। लेकिन जब उसने देखा कि वह सचमुच अलादीन को बहुत प्यार करता है, उसके लिए मिठाई लाता है, अच्छे-अच्छे कपड़े लाता है, तो उस पर विश्वास करने लगी। यहां तक कि एक दिन जब जादूगर ने कहा कि मैं अलादीन को बगीचे में घुमाने ले जाना चाहता हूं, तो वह राज़ी हो गई। उसने अलादीन को उसके साथ भेज दिया।

जादूगर ने अलादीन से कहा, "चलो बेटे, मैं तुम्हें तरह-तरह की चीज़ें दिखाने ले चलता हूं।" अलादीन उसके साथ चल पड़ा। जादूगर उसे शहर के बाहर एक बड़े-से महल और बहुत सुन्दर बगीचे में घुमाने ले गया। वहां से वह उसे बहकाकर और भी आगे शहर से बहुत दूर जंगल में ले गया। अन्त में वह झरने के किनारे बैठ गया और बोला, "आओ अलादीन, थोड़ी देर बैठकर आराम कर लो। इसके बाद हम और आगे चलेंगे। उसने अला-

दीन को अच्छी-अच्छी मिठाइयां खिलाईं। कई तरह के ताज़े फल खिलाए।

खा-पीकर वे लोग फिर आगे बढ़े। वे दोनों चलते गए, चलते चले गए। यहां तक कि कुछ देर बाद वे पहाड़ों के बीच जा पहुंचे।

अलादीन कुछ घबराने लगा। वह बार-बार पूछता था, "चाचा, हम लोग कहां जा रहे हैं ? शाही बगीचा तो बहुत पीछे छूट गया। हम लोग तो अब पहाड़ों के बीच आ पहुंचे हैं। अगर हम लोग और आगे बढ़ेंगे तो पता नहीं लौटकर घर कैसे पहुंचेंगे ?"

"डरो मत, बेटा !" उसके नकली चाचा ने कहा, "मैं तुम्हें एक-दूसरा बाग दिखाऊंगा, जो शाही बाग से भी ज़्यादा खूबसूरत है। वैसा बाग दुनिया में और कहीं नहीं है। जब तुम वहां पहुंचोगे और उसे देखोगे तब कहोगे कि हां कोई बाग तुमने देखा है! बाद में तुम्हें इस बात का पछतावा होगा कि तुम ऐसे खूबसूरत बाग को बिना देखे ही घर लौट जाना चाहते थे।"

इस तरह वह रास्ते-भर अलादीन को तरह-तरह की बातें समझता रहा। उसने उसे कई कहानियां भी सुनाईं, ताकि रास्ते की थकावट कम होती चले। अन्त में वे पहाड़ों के बीच की एक बहुत ही संकरी घाटी में जा पहुंचे। असल में वह जादूगर कई दिनों से अलादीन को इसी जगह लाना चाहता था। वह कहने लगा, "मैं यहां तुम्हें कुछ ऐसी अजीब चीज़ें दिखाऊंगा जिनके बारे में तुमने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा। अच्छा, तुम एक काम करो, जाओ, जरा सूखी लकड़ियां बटोर लाओ। मैं तब तक आग जलाता हूं।"

अलादीन थोड़ी ही देर में लकड़ियां बटोर लाया। जादूगर ने उनमें आग लगाकर एक बड़ा-सा अलाव बना दिया। जब लकड़ियां जलने लगीं तो उसने उसमें न मालूम कौन-सा बुरादा डाला, जिससे आग में से धुएं का एक बहुत बड़ा बादल उठ आया। फिर वह अपने जादू के कुछ मंत्र पढ़ने लगा। उसके ऐसा करते ही वहां की ज़मीन कांपी और फिर धीमे से फट गई। ज़मीन



जिस जगह फटी थी वहां एक बड़ा-सा चौकोर पत्थर निकल आया जिसमें पीतल का कड़ा लगा था।

अलादीन यह सब देखकर डर गया और भागने की कोशिश करने लगा। लेकिन जादूगर ने उसको कसकर पकड़ लिया और सख्ती से कहा, "पत्थर के नीचे बहुत बड़ा खज़ाना छिपा है। तुम चाहो तो उसे ले लो। उससे तुम इतने अमीर हो जाओगे कि दुनिया का बड़े से बड़ा बादशाह भी तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकेगा। लेकिन शर्त यह है कि इस पत्थर को तुम्हें खुद हटाना पड़ेगा और इस गुफा में अकेला उतरना पड़ेगा। यह सारा काम तुमको अकेले करना होगा और जैसे मैं कहूंगा ठीक वैसा ही करना होगा।"

"अच्छी बात है चाचा, क्या करना है बताओ। मैं तैयार हूं; तुम जो कहोगे मैं वही करूंगा।" धन मिलने की बात सोचकर अलादीन की हिम्मत बंध गई और सारा डर जाता रहा।

"इस पत्थर का कड़ा पकड़ लो और अपने पिता और दादा का नाम लेकर इसे ऊपर खींच लो।"

अलादीन ने ऐसा ही किया। पत्थर देखने में बहुत बड़ा था, बड़ी आसानी से ऊपर उठ आया। उसने उसे उठाकर एक तरफ रख दिया। नीचे एक बड़ा-सा छेद था जिसमें एक दरवाज़ा लगा हुआ था और सीढ़ियां बनी थीं।

"जाओ, नीचे गुफा में उतर जाओ!" जादूगर बोला। "इन सीढ़ियों को पार करने पर तुम्हें एक दरवाज़ा मिलेगा। उससे होकर तुम एक बड़े-से कमरे में पहुंच जाओगे जो तीन भागों में बंटा होगा। इनमें से हरएक कमरे में तुम्हें पीतल के चार बड़े-बड़े घड़े रखे हुए मिलेंगे, जो सोने और चांदी से भरे हुए हैं। लेकिन उन्हें तुम मत छूना। याद रखो, जब तुम पहले कमरे में पहुंचो तो अपना कुर्ता थोड़ा ऊपर उठा लेना और उसे अच्छी तरह अपनी कमर में लपेटकर ही दूसरे कमरे में जाना और उसमें से होकर तीसरे कमरे में निकल जाना इतना याद रखना कि तुम

किसी दीवार को न छू लो, वरना फौरन तुम्हारी मौत हो जाएगी। तीसरे कमरे में तुम्हें एक दरवाज़ा मिलेगा जो बाहर से एक बगीचे में खुलता है। तुम कमरों में बिना रुके सीधे उस बगीचे में चले जाना। बगीचे में तुम्हें पांच पेड़ मिलेंगे जो फलों से लदे होंगे। लेकिन तुम कहीं भी रुकने के बजाय बगीचे के रास्ते आगे बढ़ जाना। वहां तुम्हें पांच सीढ़ियां मिलेंगी। उसके बाद एक दीवार होगी, जिसके ताख में जलता हुआ दीया रखा होगा। उस दीये को उठा लेना और फूंक मारकर बुझा देना। फिर उसका तेल और बत्ती वही फेंक देना और उसे अपनी कमर में खोंसकर बाहर मेरे पास ले आना। दीये के तेल से तुम्हारे कपड़े गंदे नहीं होंगे क्योंकि असल में वह तेल नहीं है। जैसे ही तुम उसे बाहर फेंकोगे, दीया सूख जाएगा। अगर तुम बगीचे में से कोई फल तोड़कर लाना चाहो, तो बड़े मज़े से ला सकते हो।"

यह कहकर जादूगर ने अपनी अंगुली से एक अंगूठी निकालकर अलादीन को पहना दी और कहा, यह अंगूठी तुम्हारी हिफाज़त करेगी। अगर तुम ठीक-ठीक वैसा ही करोगे जैसाकि मैंने तुम्हें बताया है, तो तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी।" फिर उसने अलादीन के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "जाओ बेटा, गुफा में उतर जाओ! घबराओ मत हिम्मत से काम लो। इसके बाद हम लोग बहुत अमीर हो जाएंगे।"

अलादीन गुफा में उतर गया। सीढ़ी पार करने के बाद उसे वही चार कमरे मिले जिनके बारे में जादूगर ने बताया था। वह कमरों के बीच से होते हुए और बिना रुके बगीचा पार करके बहुत जल्दी ही उस जगह जा पहुंचा, जहां वह जादुई चिराग रखा हुआ था।

उसने दीया उठाकर बुझा दिया। उसकी बत्ती और तेल फेंककर उसने उसे अपनी कमर में खोंस लिया। इसके बाद वह बगीचे में लौट आया। उसने देखा कि बगीचे में तरह-तरह के रंग-बिरंगे और चमकदार फल लगे हुए हैं।

अलादीन एक गरीब लड़का था। उसने आज तक कभी हीरे-जवाहरात नहीं देखे थे। इसलिए वह पहचान नहीं सका कि पेड़ों पर रंग-बिरंगे फल नहीं लगे थे, बल्कि तरह-तरह के कीमती पत्थर, हीरे-जवाहरात और मोती लगे हुए थे। अलादीन ने अधिक से अधिक यही समझा कि ये रंगीन पत्थर हैं। इसलिए उन्हें तोड़-तोड़कर वह अपनी जेब में भरने लगा। जब जेबें भर गईं तो उसने अपने कुर्ते में भी डाल लिए। उसने इतने हीरे-जवाहरात इकट्ठे किए कि उससे चलते नहीं बन रहा था।

इसके बाद वह उन्हीं कमरों में से होता हुआ गुफा के दरवाज़े पर पहुंच गया, जहां वह अफ्रीकी जादूगर बड़ी बेचैनी से उसका इन्तज़ार कर रहा था।

"लाओ, दीया मुझे दे दो!" जादूगर ने कहा।

अलादीन बोला, "हां-हां, चाचा, दीया मैं तुम्हें दे दूंगा। लेकिन देख रहे हो, मेरे हाथ भरे हुए हैं। मैंने कितना वज़न उठा रखा है। ज़रा बाहर आने में मेरी मदद कर दो।"

लेकिन जादूगर उस जादुई चिराग को जल्दी से जल्दी हथिया लेना चाहता था। जब अलादीन उसे देने में आनाकानी करने लगा तो उसे गुस्सा आ गया। उसने गुस्से में मंत्र पढ़ा, और आग में कोई बुरादा डालकर धुआं पैदा किया जैसे ही उसने मंत्र पढ़ा, पत्थर अपने-आप आकर गुफा के मुंह पर बैठ गया। अब अलादीन गुफा में ही कैद हो गया।

जादूगर ने सोचा कि अब वह लड़का वहीं मर जाएगा और जादुई चिराग भी अब उसके हाथ नहीं आएगा। इसलिए वह इतना निराश हुआ कि वहां से फौरन अफ्रीका के लिए रवाना हो गया।

इधर अलादीन ने जब यह देखा कि वह गुफा में कैद हो गया है, तो मारे डर के कांपने लगा। वह रोने लगा और चिल्ला-चिल्लाकर अपने चाचा को आवाज़ देने लगा। लेकिन सब बेकार। उसकी आवाज़ बाहर पहुंच ही नहीं सकती थी। उसने सोचा

कि चलो बगीचे में चलें। लेकिन यह भी नहीं हो सकता था, क्योंकि वह दरवाज़ा भी जादू से बन्द हो गया था।

अब अलादीन निराश होकर सीढ़ियां पर बैठ गया। वहां घना अंधेरा था। वह चुपचाप आंसू बहाता रहा। इसी तरह दो दिन बीत गए। उसने न कुछ खाया न कुछ पीया। वह दिन-भर रोता रहता था। अन्त में जब उसे लगा कि यहां से बचकर निकलना मुश्किल है, तो वह अपने लिए खुदा से दुआ मांगने लगा। ऐसा करते समय जब उसने हाथ जोड़े तो अचानक अपने हाथ से उस अंगूठी को घिस दिया जो उसे जादूगर ने पहनाई थी।

अंगूठी के घिसते ही वहां एक बड़ा भारी दैत्य ज़ोरों से दहाड़ते हुए न मालूम कहां से पहुंचा। आते ही उसने सलाम करके अलादीन से कहा, "या मेरे आका, हुक्म करो! मैं आपका गुलाम हूं! मैं और मेरे साथ के दूसरे दैत्य, हम सब लोग इस अंगूठी के गुलाम हैं, जो आपने पहन रखी है।"

अलादीन, इस दैत्य को देखकर कुछ देर के लिए सहम गया। फिर बोला, "पहले मुझे इस गुफा से बाहर निकालो।"

जैसे ही उसने यह हुक्म दिया, दूसरे ही क्षण दैत्य ने उसे गुफा से बाहर ला खड़ा किया।

गुफा से निकलकर अलादीन सीधा अपने घर की ओर रवाना हुआ। घर पर मां उसका इन्तज़ार कर रही थी। वह उसके सिर पर हाथ फेरकर रोने लगी। लेकिन अलादीन ने उसे सारा किस्सा कह सुनाया। उसने वे सारे कीमती पत्थर अपनी मां को दिखाए और फिर उसको कुर्सी की गद्दी में अच्छी तरह छिपाकर रख दिया। उसकी मां यह सब सुनकर बहुत खुश हुई।

दूसरे दिन सुबह जब अलादीन सोकर उठा तो उसे बड़ी तेज़ भूख लग रही थी। लेकिन उसकी मां के पास कुछ था ही नहीं, भला खाने को क्या देती! हां, उसने थोड़ा-सा सूत कात रखा था। उसी को बेचकर वह खाना लाने वाली थी।

अलादीन बोला, "नहीं, नहीं, मां, अपना सूत रखो। यह

किसी और दिन काम आएगा। तुम तो मेरा वह चिराग निकाल दो, जिसे मैं गुफा से लाया हूं। उसे बेचकर मैं इतने पैसे पा ही जाऊंगा कि दिन-भर का खाना खरीदा जा सके।"

उसकी मां ने दीया बाहर निकाला। दीया उसे कुछ गन्दा मालूम हुआ। उसने सोचा कि इसे अच्छी तरह साफ कर दूं तो शायद ज़्यादा पैसे मिलेंगे। यह सोचकर वह उसे मांजने बैठी। लेकिन जैसे ही उसने दीये को रगड़ा कि वहां एक बड़ा भारी दैत्य आ खड़ा हुआ। वह गरजते हुए बोला, "या मेरे आका, हुक्म करो! मैं तुम्हारा गुलाम हूं! मैं और मेरे साथ के दूसरे दैत्य, हम लोग इस चिराग के गुलाम हैं, जिसे तुमने अभी-अभी रगड़ा है।"

अलादीन की मां उस दैत्य को देखकर इतनी डरी कि वहीं बेहोश हो गई; लेकिन अलादीन ने साहस से काम लिया और दीया अपने हाथ में उठाकर कहा, "ज़रा मेरे लिए खाना ले आओ, मुझे बहुत भूख लगी है।" दैत्य गायब हो गया और दूसरे ही क्षण चांदी की एक बड़ी-सी तश्तरी में कई तरह के पकवान और खाने-पीने की दूसरी चीज़ें ले आया। जब अलादीन की मां की तबीयत ठीक हो गई तो दोनों मिलकर खाना खाने लगे। खाना बहुत ही अच्छा था। बर्तन भी चांदी के थे।

उस दिन के बाद से जब भी खाना खरीदने की ज़रूरत होती थी तो वे लोग इन चांदी के बर्तनों को बेचकर खाना खरीद लेते थे। अब अलादीन बहुत समझदार लड़का हो गया था। वह पैसे बचाकर रखने लगा ताकि ज़रूरत के वक्त काम आ सकें। अन्त में जब सारा पैसा खतम हो गया और बर्तन भी बाकी नहीं रहे, तो उसने चिराग घिसकर फिर दैत्य को बुलाया और खाना लाने को कहा।

दैत्य उसी तरह चांदी के बर्तनों में खाना ले आया। फिर कुछ महीने तक इसी तरह चलता रहा। बर्तन बेच-बेचकर अलादीन पैसे ले आता था। इसके बाद अलादीन अक्सर उन बड़ी-बड़ी

दुकानों में चला जाता था, जहां बहुत कीमती कपड़े रेशम, मख़-मल और हीरे-जवाहरात वगैरह मिला करते थे। वह इस तरह कीमती कपड़ों के दाम मालूम करने लगा, हालांकि उसे खरीदना कुछ भी नहीं था। अब उसे मालूम हो गया था कि वह उस जादू के बगीचे से जो फल तोड़कर लाया था, वे पत्थर के रंगीन टुकड़े नहीं थे, बल्कि सचमुच के हीरे-जवाहरात थे।

एक दिन जब अलादीन शहर में घूमने निकला तो रास्ते में उसने सुना कि सिपाही ऐलान कर रहे थे, "सब लोग अपने-अपने घरों में लौट जाएं, और खिड़कियां बन्द कर लें क्योंकि चीन के सुल्तान की शाहज़ादी स्नान के लिए जानेवाली है !"

अलादीन शाहज़ादी का रूप देखने का बहुत इच्छुक था। मौका देखकर वह उस जगह के पास एक दरवाज़े की ओट में जा छिपा, जहां शाहज़ादी नहाने के लिए जाया करती थी। जैसे ही वह वहां जाकर छिपा कि शाहज़ादी का जुलूस वहां आ पहुंचा। जब शाहज़ादी स्नानागार में घुसने लगी तो उसने अपना घूंघट हटा दिया। अलादीन उसकी सुन्दरता देखकर उस पर मुग्ध हो गया। ऐसी सुन्दर लड़की उसने आज तक नहीं देखी थी—घने काले बाल, बड़ी-बड़ी चमकती हुई आंखें, लम्बी नाक !

अलादीन वहां से निकलकर घर पहुंचा। उस दिन शाम को किसी काम में उसका मन नहीं लगा। दूसरे दिन सबेरे उसने मां से कहा, "मां, मुझे शाहज़ादी से प्रेम हो गया है। मैं उसीसे शादी करूंगा। मैं बादशाह से कहूंगा कि शाहज़ादी का ब्याह मुझसे कर दीजिए।"

उसकी मां ने आश्चर्य से कहा, "अरे बेटा, यह क्या कह रहे हो तुम ? कहीं पागल तो नहीं हो गए ! तुम तो जानते ही हो कि तुम्हारा बाप इस शहर का सबसे गरीब दर्ज़ी था। भला सुलतान अपनी लड़की हमें क्यों देने लगा ?"

"मैं पहले ही जानता था मां, कि तुम क्या कहोगी। लेकिन मैं तो शाहजादी से ही ब्याह करूंगा। कम से कम तुम तो मुझे

इजाजत दे दो।"

उसकी मां यह सब सुनकर बहुत घबराई। उसने अलादीन को समझाने की बड़ी कोशिश की, लेकिन वह नहीं माना। अन्त में वह अलादीन के लाए हुए हीरे-जवाहरात का तोहफा लेकर बादशाह के पास जाने को राजी हो गई।

पहले दिन तो वह महल में घुस ही नहीं पाई, क्योंकि काफी देर हो गई थी। अलादीन ने रात को सोने के पहले मां को समझा दिया, "मां, कल जब तुम सुलतान के पास बातचीत करने जाओ तो उसको या किसी को भी अपने जादुई चिराग के बारे में न बताना, क्योंकि उसके बल पर हम सब कुछ कर सकते हैं।"

दूसरे दिन फिर से उसकी मां किसी न किसी तरह कोशिश करके दरबार में जा पहुंची। वहां बादशाह अपने वजीर और दूसरे दरबारियों के साथ बैठा था। अलादीन की मां चुपचाप एक कोने में जाकर खड़ी हो गई। वह दिन-भर खड़ी रही, लेकिन किसी ने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। शाम को जब बादशाह का दरबार उठ गया, तो वह घर लौट आई। अलादीन को यह देखकर बड़ा दुःख हुआ। उसने अपनी मां को फिर से दरबार में भेजा। इस तरह कई दिन तक वह दरबार में जाती रही। वह एक कोने में खड़ी रहती थी।

अन्त में बादशाह की नज़र उस पर पड़ गई। उसने अपना एक आदमी भेजकर बुढ़िया को पास बुलवाया। वह जाकर बादशाह के आगे सिर झुकाकर खड़ी हो गई। सुलतान ने उसे अपनी ओर आने का इशारा किया और कहा, "मैं तुम्हें अक्सर सवेरे से शाम तक यहां खड़ी हुई देखता हूं। बोलो, क्या बात है। तुम क्या चाहती हो?"

बुढ़िया इतनी घबराई थी कि उसके मुंह से बात नहीं निकल पा रही थी। बादशाह ने सारे दरबारियों को वहां से चले जाने का हुक्म दिया। सिर्फ बड़े वजीर को छोड़कर। जब वहां कोई नहीं रहा तो बादशाह ने फिर कहा, "डरो मत, यहां कोई नहीं

है। अपनी बात साफ-साफ कहो।"

अलादीन की मां ने कांपती हुई आवाज़ में कहा, "शाहंशाहे आलम, मैं अपनी बात तो कहती हूं, लेकिन अगर आपको मेरी मांग ज़रूरत से ज़्यादा मालूम हो तो मेहरबानी करके आप मुझे माफ कर दें।"

बादशाह बोला, "ठीक है, तुम कहो तो, डरो मत।"

तब अलादीन की मां ने बादशाह को साफ-साफ बता दिया कि किस तरह अलादीन ने शाहज़ादी को देखा था और किस तरह वह उसके प्यार में दीवाना हो गया है और उसी से शादी करना चाहता है। बादशाह ने चुपचाप उसकी यह बात सुनी। वह ज़रा भी नाराज़ नहीं हुआ। लेकिन उसे कुछ जवाब देने से पहले उसने उससे पूछा, "यह तुम अपने साथ गठरी में बांधकर क्या लाई हो?"

बुढ़िया ने गठरी खोली और उसने चांदी की एक तश्तरी जिसमें हीरे-जवाहरात का ढेर लगा था, सुल्तान के पैरों के पास रख दी। इतने बड़े-बड़े जवाहरात देखकर बादशाह की आंखें फटी की फटी रह गईं। वह खुश होकर बोला, "वाह, खूब! तुम तो बहुत अमीर हो! इतने कीमती जवाहरात, और इतने सारे!"

फिर बादशाह ने अपने वज़ीर की ओर मुड़कर कहा, "क्यों क्या ख्याल है? ऐसा बेशकीमती तोहफा अगर यह बुढ़िया लाई है तो इसकी बात पर गौर किया जा सकता है। शाहज़ादी ऐसे ही तोहफे के काबिल है।"

लेकिन बात यह थी कि वज़ीर अपने लड़के की शादी शाहज़ादी से करना चाहता था। उसने धीरे-से बादशाह के कान में कहा, "हुज़ूर, अगर मुझे तीन महीने का वक्त मिले, तो मैं इससे भी अच्छा तोहफा आपकी खिदमत में पेश कर सकता हूं!"

बादशाह जानता था कि कोई भी तोहफा इन बेशकीमती हीरे-जवाहरातों का मुकाबला नहीं कर सकता। उसने बुढ़िया से

कहा, "तुम जाओ, अपने लड़के से कहो कि मुझे उसकी बात मंजूर है, लेकिन मैं इतनी जल्दी शाहज़ादी की शादी नहीं कर सकूंगा। कम से कम तीन महीने का वक्त चाहिए। तुम तीन महीने बाद ज़रूर आना।"

बुढ़िया बड़ी खुश हुई और घर लौट आई। जब अलादीन को उससे सारी बातें मालूम हुईं तो वह मारे खुशी के नाच उठा और अपनी मां के गले से लिपट गया। अब दोनों मां-बेटे खुशी-खुशी अपने दिन काटने लगे। अलादीन एक-एक दिन गिनने लगा, कब तीन महीने बीतें और कब वह शाहज़ादी को अपने घर ले आए। धीरे-धीरे दिन गुज़रने लगे।

जब दो महीने बीत गए तो अचानक एक दिन अलादीन की मां ने सुना कि शाहज़ादी की शादी बड़े वज़ीर के लड़के के साथ होने वाली है और वह भी उसी रात को! अलादीन को जब यह मालूम हुआ तो वह हक्का-बक्का रह गया, जैसे उसके पैरों के तले से ज़मीन खिसक गई हो। कुछ देर तक तो उसकी समझ में नहीं आया, अब क्या किया जाए। अचानक उसे अपने जादुई चिराग की याद आई। वह अन्दर अपने कमरे में गया और उस जादुई चिराग को रगड़कर उसने दैत्य को अपने पास बुलाया।

जब दैत्य आ गया तो उसने कहा, "जाओ, और शाहज़ादी और वज़ीर के लड़के को, जैसे ही उनकी शादी शुरू हो, यहां उठा लाओ!"

रात हुई। जब शाहज़ादी और वज़ीर के लड़के की शादी हो रही थी, तब दैत्य अचानक वहां पहुंचा और उन दोनों को उठा लाया।

अलादीन ने शाहज़ादी को अपने घर में रखा और वज़ीर के लड़के को एक कोठरी में बन्द कर दिया। इसके बाद सवेरे उन दोनों को फिर से वापस महल में भेज दिया।

दूसरी रात को फिर दैत्य उन दोनों को उठा लाया। जब दो-तीन दिन इसी तरह बीत गए तो वज़ीर का लड़का घबरा गया।

शाहज़ादी ने भी बादशाह को सारी बातें बता दीं और कहा, "यह शादी रोक दीजिए, वरना वह दैत्य ज़िन्दगी-भर मुझे तंग करता रहेगा।" अन्त में बादशाह को मजबूर होकर उस शादी से इंकार करना पड़ा।

अलादीन को जब यह मालूम हुआ कि शादी रुक गई तो वह बड़ा खुश हुआ। उसने दैत्य को बुलाकर उसे धन्यवाद दिया। किसी तरह तीन महीने पूरे हुए। अलादीन ने फिर से अपनी मां को बादशाह के पास संदेश लेकर भेजा।

बादशाह को अपना वायदा याद था। लेकिन असल में वह एक दर्ज़ी के लड़के के साथ अपनी शाहज़ादी को नहीं ब्याहना चाहता था। इसलिए उसने फिर से बड़े वज़ीर से राय ली। बड़े वज़ीर ने उससे कहा, "हुज़ूर, आप अलादीन से शाहज़ादी के लिए इतना कीमती तोहफा मांगिए कि वह ला ही न सके।"

बादशाह ने अलादीन की मां से कहा, "सुनो बुढ़िया, तुम्हारा यह कहना सही है कि बादशाह को अपनी बात पर दृढ़ रहना चाहिए और उसे ज़रूर निभाना चाहिए। मैं भी अपना वादा पूरा करने और अलादीन के साथ शाहज़ादी की शादी करने को तैयार हूं। तुम जाकर अपने बेटे से कहो कि वह सोने की चालीस तश्तरियां वैसे ही हीरे-जवाहरात से भरकर भेजे, जैसे कि उसने पहले भेजी थीं। इन चालीस तश्तरियों को चालीस काले रंग के हब्शी गुलाम उठाए होंगे और उनके पीछे-पीछे चालीस सजी-सजाई और खूबसूरत लड़कियां होनी चाहिएं। अगर यह सब मुझे मिल जाए तो मैं शादी के लिए तैयार हूं। जाओ, अपने लड़के को यह सब कह दो।"

अलादीन की मां यह सुनकर बड़ी दुःखी हुई और अपने घर लौट आई। उसे यह चिन्ता होने लगी कि भला मेरे जैसी गरीब विधवा के लड़के को इतना धन कहां मिल सकता है। लेकिन जब उसने अलादीन से यह सब कहा तो वह हंसकर बोला, "कोई बात नहीं, अगर बादशाह इससे ज़्यादा भी मांगता, तो मैं उसकी

मांग पूरी कर सकता था ।"

अलादीन ने जादुई चिराग से फौरन उस दैत्य को अपने पास बुलाया और सारी स्थिति समझाकर जल्दी बादशाह की मांग पूरी करने का हुक्म दिया। थोड़ी ही देर में दैत्य ने सारा इन्तज़ाम कर दिया । चालीस काले-काले हब्शी अच्छी पोशाकें पहने और सिर पर सोने की थालियों में हीरे-जवाहरात लिए वहां आ पहुंचे । इस बार के हीरे जवाहरात पहले से भी ज़्यादा अच्छे और सुन्दर थे । इनके पीछे-पीछे चालीस सजी-सजाई लड़कियां थीं ।

जब सब कुछ तैयार हो गया तब अलादीन ने अपनी मां से कहा, "जाओ मां, इन लोगों को बादशाह के पास ले जाओ ।"

जब गुलामों का जुलूस शहर की सड़कों से होकर गुज़रा तो लोगों ने आश्चर्य से दांतों तले उंगलियां दबा लीं । इतना धन तो उन्होंने आज तक कभी नहीं देखा था । रास्ते में भीड़ लगने लगी । इस जुलूस के आगे-आगे एक आदमी बहुत ही अच्छे कपड़े पहने चल रहा था ।

जब जुलूस महल के पास पहुंचा तो पहरेदारों ने सबसे आगे चलने वाले आदमी को कोई बहुत बड़ा शाहज़ादा समझा, लेकिन उसने कहा, "मैं तो असल में गुलाम हूं । मेरे मालिक मौके पर यहां तशरीफ लाएंगे ।" अन्दर महल में बादशाह तक इन लोगों के आने की खबर पहुंच चुकी थी । वह उत्सुकता से उनकी राह देख रहा था । वह यह देखकर दंग रह गया कि इतनी-सी देर में अलादीन ने उसकी मांग पूरी कर दी । उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि अब किस तरह बुढ़िया को फिर से कोई बहाना बनाकर वापस किया जाए ।

अन्त में मजबूर होकर उसने कहा, "बूढ़ी दादी, जाओ और अपने लड़के से कहो कि मैं उसका स्वागत करने के लिए तैयार खड़ा हूं । जितनी जल्दी से जल्दी वह शादी के लिए आ सके उतना अच्छा है । शाहज़ादी की शादी उसके साथ करते हुए मुझे

बड़ी खुशी हो रही है।"

जब अलादीन की मां ने उसे यह सब बताया तो वह खुशी ने नाच उठा। उसने फौरन चिराग के दैत्य को बुलाया और उसे अपनी शादी के इन्तज़ाम का हुक्म दिया। दैत्य ने सिर झुकाकर उसे सलाम किया और मिनटों में सारा इंतज़ाम कर दिया। उसके लिए एक बहुत अच्छा सजा-सजाया घोड़ा आ खड़ा हुआ और सैकड़ों गुलाम अच्छे-अच्छे कपड़े पहने हुए उसके पीछे-पीछे चलने के लिए तैयार हो गए।

इस तरह अलादीन की बारात चली। रास्ते में उसके गुलाम रुपये लुटाते चल रहे थे। शहर-भर में सनसनी फैल गई। ऐसी सुन्दर बारात तो आज तक किसी की नहीं निकली थी। लोग जगह-जगह भीड़ लगाकर बारात देखने खड़े हो गए।

जब अलादीन की बारात महल के दरवाज़े पर पहुंची तो बादशाह ने आगे बढ़कर उसका स्वागत किया और उसे अपने गले से लगा लिया। बादशाह को यह देखकर और भी खुशी हुई कि अलादीन जवान और सुन्दर था। उसने उसी दिन बड़ी धूमधाम से शाहज़ादी का विवाह उसके साथ करना चाहा।

लेकिन अलादीन ने बादशाह से कहा, "सबसे पहले मुझे शाहज़ादी के रहने के लायक एक महल का इन्तज़ाम करना है। अगर आप अपने महल के पास थोड़ी ज़मीन मुझे दे दें तो बड़ा अच्छा हो। मैं यहीं अपना महल बनवा लूं पास रहने से मैं आपकी सेवा भी कर सकूंगा।"

बादशाह बोला, "तुम्हें जितनी ज़मीन चाहिए ले लो, लेकिन शादी का इन्तज़ाम जल्दी करना, क्योंकि बिना शाहज़ादी की शादी किए मुझे चैन नहीं मिलेगा।" यह कहकर उसने अलादीन को फिर से गले लगा लिया। अलादीन भी उसी तरह अदब के साथ बादशाह को सलाम करके वहां से रवाना हो गया। उसका सारा व्यवहार इतना अच्छा था कि लगता था जैसे वह हमेशा राज-दरबार में ही उठता-बैठता रहा है।

घर आकर वह घोड़े से उतरा और फौरन अपने कमरे में जा पहुंचा। उसने चिराग के दैत्य को बुलाकर हुक्म दिया, "जल्दी से जल्दी बादशाह के महल के पास ही मेरे लिए एक खूबसूरत महल बना दो। वहीं तुम कल मुझसे मिलना।"

दूसरे दिन दैत्य ने आकर अलादीन से कहा, "मेरे आका, आपका हुक्म तामील हो गया है। कैसा आलीशान महल बना है, चलिए देख लीजिए।"

अलादीन उसके साथ-साथ एक पालकी में बैठकर अपना महल देखने के लिए आया। उसे खुद बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि कैसे दैत्य ने इतनी जल्दी और इतना अच्छा महल बना दिया। बाद में बादशाह को मकान देखने के लिए बुलाया गया। बादशाह को अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने अपने सारे दरबारियों को भी महल दिखलाया। सबने महल की बड़ी तारीफ की। फिर अलादीन ने अपनी मां को राजमहल भेजा ताकि वह शाहज़ादी को फौरन वहां से ले आए।

जैसे ही बादशाह यह खबर मिली कि अलादीन को मां महल में आ रही है, उसने हुक्म लिया, और पूरा महल अच्छे-अच्छे गानों की आवाज़ से गूंज उठा। शाहज़ादी के विवाह की खबर से पूरे देश में खुशी की लहर दौड़ गई। उस दिन शहर में इतने दीये जलाए गए कि रात को भी दिन मालूम होने लगा। लोग सारी रात नाचते-गाते रहे।

शाहज़ादी अपनी बांदियों के साथ नये महल में रहने आई। अलादीन ने अपना जादुई चिराग महल में एक जगह छिपाकर रख दिया। दोनों साथ-साथ आराम से रहने लगे। अब उन्हें किसी बात की कमी नहीं थी। बादशाह भी अलादीन को बहुत मानता था।

अलादीन इसी तरह हमेशा आराम से शाहज़ादी के साथ रह सकता था, लेकिन अभी वह शरारती जादूगर ज़िन्दा था। वह अफ्रीका चला गया था। लेकिन उसे सब मालूम था कि अलादीन

क्या कर रहा है। उसके पास एक जादुई डिब्बा था। उसमें देखकर दुनिया की हर बात उसे मालूम हो जाती थी। डिब्बे में देखने से उसे मालूम हुआ कि अलादीन उस गुफा से जादुई अंगूठी की मदद से बचकर निकल आया और एक शाहज़ादी से शादी करके ठाट से महल में रहता है।

यह सब देखकर जादूगर गुस्से से पागल हो गया। उसने दांत पीसकर कहा, "वाह, एक भुखमरे दर्जी का लड़का आज शाहज़ादे की तरह रहता है! जादुई चिराग, जिसे मैं पाना चाहता था, आज उसके पास है! मैं तो उसे मारना चाहता था, लेकिन वह मुझे धोखा देकर आज मज़े में रह रहा है! मैं उसको छोड़ूंगा नहीं!"

अब जादूगर को एक क्षण का भी चैन नहीं था। वह दिन-रात यही सोचता था कि किस तरह अलादीन को मारा जाए और जादुई चिराग उससे छीना जाए। वह अलादीन से बदला लेने के लिए चीन लौट आया। वहां आने पर उसे मालूम हुआ कि अलादीन कहीं बाहर शिकार खेलने गया है। यह सुनकर जादूगर बड़ा खुश हुआ। वह इसी मौके की तलाश में था।

वह फौरन एक ठठेरे के पास गया। उसने उससे एक दर्जन तांबे के दीये बनाने को कहा। ठठेरे ने दीये बना दिए। दूसरे दिन जादूगर ने अपना भेस बदला और कन्धे पर एक डलिया में दीये लेकर वह उन्हें बेचने सीधा अलादीन के महल में जा पहुंचा और आवाज़ लगाने लगा, "पुराने दीये के बदले में नये दीये लो! दीयों की मरम्मत करा लो!"

जब शाहज़ादी ने उसकी आवाज़ सुनी तो अपने एक गुलाम को भेजकर पता लगवाया। गुलाम ने आकर शाहज़ादी को बताया, "हुज़ूर, एक पागल दीये वाला है। वह पुराने दीये लेकर उनकी जगह नये दीये देता है।" तभी शाहज़ादी की दासी ने कहा, "हुज़ूर, अपने यहां भी एक पुराना दीया पड़ा है, क्यों न उसे देकर नया दीया ले लिया जाए?"

शाहज़ादी को उसकी बात पसन्द आ गई। उसने वह दीया मंगवाया। दासी वही दीया ले आई, जिसे अलादीन गुफा में से लाया था। शाहज़ादी को यह नहीं मालूम था कि यह जादू का दीया है और इसी के बल पर अलादीन ने इतना बड़ा काम किया है। उसने वह दीया जादूगर को दिलवा दिया और उसकी जगह पर एक नया दीया ले लिया। महल में सब लोग उस दीये वाले की मूर्खता पर हंसते रहे कि उसने एक इतना पुराना दीया लेकर उसकी जगह एकदम नया दीया दे दिया। उधर जादूगर मन ही मन उनकी मूर्खता पर हंसता रहा।

जैसे ही जादूगर के हाथ में जादू का दीया आया, उसने उसे रगड़कर दैत्य को अपने पास बुलाया और उससे कहा, "इस पूरे महल को और मुझको भी यहां से उड़ाकर अफ्रीका पहुंचा दो।" उसके कहते ही चिराग के दैत्य ने अपने दूसरे साथियों के साथ शाहज़ादी के महल को उठा लिया और उसे लेकर अफ्रीका की ओर उड़ चले।

दूसरे दिन बादशाह सोकर उठा तो उसे यह देखकर बड़ा अचरज हुआ कि उसके महल के पास ही उसकी शाहज़ादी का जो महल था, वह गायब था। उसने बार-बार अपनी आंखों को मलकर देखा, लेकिन जब महल था ही नहीं तो उसे दिखाई कहां से देता! वह अपनी प्यारी बेटी की याद में आंसू बहाने लगा। उसने फौरन अपने बड़े वज़ीर को बुलाकर हुक्म दिया कि शाहज़ादी के महल का पता लगाया जाए।

वज़ीर ने आदमी भेजकर पता लगवाया। लेकिन न तो महल ही मिला और न शाहज़ादी ही। बादशाह दुःख और गुस्से के मारे अपनी सुध-बुध खो बैठा। उसने हुक्म दिया, "अलादीन को फौरन पकड़कर मेरे सामने हाज़िर किया जाए! यह सब उसी का काम है। फौरन उसकी गर्दन उतार ली जाए!"

सिपाहियों को पता था कि अलादीन किस जगह शिकार खेलने गया है। वे फौरन उसी तरफ बढ़ चले। लेकिन अलादीन

उन्हें रास्ते में ही मिल गया क्योंकि वह शिकार से लौट रहा था। सिपाही उसे गिरफ्तार नहीं करना चाहते थे, क्योंकि वे अलादीन को बहुत प्यार करते थे। लेकिन बादशाह का हुक्म था। बिना बांधे काम नहीं चल सकता था। इसलिए वे उसे जंजीरों में जकड़कर शहर ले आए।

अलादीन की समझ में कुछ नहीं आया। वह जंजीर से छूटने के लिए छटपटाने और चीखने-चिल्लाने लगा। रास्ते में जब लोगों ने अपने प्यारे शाहज़ादे को इस तरह गिरफ्तार हुआ देखा तो उन्हें बड़ा अफसोस हुआ। वे भी उसके पीछे चलने लगे।

अलादीन को बादशाह के सामने पेश किया गया। उस समय बादशाह बड़े वज़ीर के साथ बैठा सलाह-मशविरा कर रहा था। अलादीन को देखते ही उसकी आंखों से चिनगारियां बरसने लगीं और मारे गुस्से के पैर कांपने लगे। उसने चीखकर कहा, "इस धोखेबाज़ का सिर उड़ा दिया जाए, फौरन!"

सिपाही उसे खींचते हुए जल्लाद के पास ले गए। जल्लाद ने अलादीन के गले से जंजीर अलग कर दी और फिर उसे लकड़ी के एक कुन्दे पर सिर टिकाकर बैठने को कहा। अलादीन की आंखों पर पट्टी बांध दी गई। इसके बाद जैसे ही जल्लाद ने उसका सिर काटने के लिए अपना फरसा उठाया कि महल के बाहर खड़े लोग चीखने-चिल्लाने लगे। उन्होंने इतने अच्छे आदमी को मौत की सजा देने के खिलाफ आवाज़ उठाना शुरू किया और बादशाह से मांग की कि इसे छोड़ दिया जाए। अन्त में मजबूर होकर बादशाह को उसे मृत्युदण्ड से बचाना पड़ा और कालेपानी की सज़ा देनी पड़ी। लोगों ने जब यह सुना तो वे खुशी-खुशी अपने घर लौट गए।

अलादीन की समझ में कुछ नहीं आया कि यह सब क्या हो रहा है। उसने बादशाह से पूछा, "हुजूर, ज़रा, मुझे यह तो बताइए कि आखिर आप मुझ पर इतने खफा क्यों हैं?"

बादशाह ने उसे बताया कि किस तरह महल के साथ शाह-

ज़ादी भी अचानक वहां से गायब हो गई। महल के गायब होने का उसे इतना गम नहीं था जितना कि शाहज़ादी के गायब होने का था। अलादीन ने जब यह सुना तो फौरन उसने समझ लिया कि यह काम उसी जादूगर का हो सकता है। शायद उसे जादुई चिराग मिल गया है। अलादीन मन में बहुत घबराया। उसे कुछ डर भी लगा। लेकिन उसने हिम्मत के साथ बादशाह से कहा, "सरकार मुझे चालीस दिन की मोहलत दीजिए। मैं सारे किस्से का पता लगाकर आपको बता दूंगा। अगर इस बीच मैं यह काम पूरा नहीं कर सका तो खुशी-खुशी अपना सिर कटवाने के लिए तैयार हो जाऊंगा।"

बादशाह ने कहा, "ठीक है, मैं तुम्हें इस काम के लिए चालीस दिन की मोहलत देता हूं, लेकिन याद रखो, तुम कहीं भागने की कोशिश न करना, वरना तुम दुनिया में जहां रहोगे वहां से मैं तुम्हें पकड़ मंगवाऊंगा।"

अलादीन ने हिम्मत तो बहुत बांधी, लेकिन मन में उसे बड़ा डर लग रहा था। वह बादशाह के पास से चला आया, लेकिन अब कहां जाए और किससे मदद मांगे यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। इतना तो साफ था कि अब उस जादुई चिराग का उस जादूगर के हाथ से निकलना बहुत मुश्किल था। जब तक वह जादुई चिराग उसके हाथ में नहीं आता, तब तक वह दैत्य से मदद नहीं ले सकता। बहुत सोचने पर भी उसका दिमाग काम नहीं कर रहा था।

वह तीन दिन तक अपने शहर की सड़कों और गलियों की खाक छानता रहा और अन्त में गांवों की ओर चल पड़ा। रास्ते में एक नदी में उसने हाथ-मुंह धोया। अपनी थकी हुई आंखों पर ठंडे पानी के छींटे डाले। और वह उठने लगा कि उसके पैर कुछ लड़खड़ाए। उसने सहारा लेने के लिए पास की चट्टान पर जो हाथ बढ़ाया तो वह भी फिसल गई।

अचानक अपने पीछे उसने किसी की आवाज़ सुनी, "बोलो,

तुम क्या चाहते हो ?" अलादीन ने पीछे फिरकर देखा तो एक दैत्य खड़ा हुआ था। दैत्य हंसा और बोला, "हुक्म दो, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं ? जब तक यह अंगूठी तुम्हारे पास है, मैं अपने साथियों के साथ तुम्हारा गुलाम हूं !"

"अरे तुम, कैसे आ गए ? मैं तो भूल ही गया था कि मेरी उंगली में यह अंगूठी भी है।" यह अंगूठी उसे उसी जादूगर ने दी



थी, जब वह पहले-पहल उस गुफा में उतरा था।

अलादीन ने उस दैत्य से कहा, "भाई, एक बार तुम मेरी जान बचा चुके हो, लेकिन एक बार और मुझ पर मेहरबानी करो! मुझे तुम यह बता दो कि मैंने अपना जो सोने का महल खड़ा किया था वह अचानक कैसे गायब हो गया। उसे बनवाने में हालांकि मुझे खास काम नहीं करना पड़ा था, लेकिन वह महल मुझे बहुत पसन्द था और उसमें शाहज़ादी भी रहती थी। इसलिए तुम पता लगाकर बताओ कि वह महल कहां गया या, हो सके तो उसे वापस उठा लाओ।"

दैत्य बोला, "तुम जो काम मुझे सौंप रहे हो, वह मेरे वश के बाहर का है। सिर्फ जादुई चिराग का दैत्य ही तुम्हारे महल को वापस ला सकता है। मैं इतना कर सकता हूं कि तुम्हें उस जगह पहुंचा दूं, जहां आजकल तुम्हारा महल खड़ा है।"

अलादीन खुश होकर बोला, "अगर ऐसी बात है तो ठीक है, इस अंगूठी के बल पर मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि तुम मुझे मेरे महल के पास जल्दी पहुंचा दो, चाहे वह दुनिया के किसी कोने में क्यों न हो!"

अलादीन ने जैसे ही यह कहा, उस दैत्य ने उसे अपनी पीठ पर बिठा लिया और देखते-देखते उसे उस जगह ला खड़ा किया जहां उसका महल जादूगर चुराकर ले गया था।

अलादीन जिस जगह खड़ा था, वहां से वह उस खिड़की को देख सकता था, जो शाहज़ादी के कमरे में पड़ती थी। अलादीन एक नज़र में ही सब कुछ पहचान गया। हालांकि रात का समय था, फिर भी वह अपने महल को अच्छी तरह जानता था। लेकिन उसने सवेरे तक इन्तज़ार कर लेना ज़रूरी समझा, क्योंकि उसे यह नहीं मालूम था कि जादूगर वहां है या नहीं, और यह देश कौन-सा है, शायद अफ्रीका ही है। वह वहीं बैठकर शाहज़ादी को छुड़ाने की तरकीबें सोचने लगा। वह दो रात का जगा हुआ था, इसलिए वहीं सो गया।

दूसरे दिन सवेरे चिड़ियों का चहचहाना सुनकर अलादीन की नींद खुली। वह फौरन महल की खिड़की के पास एक पेड़ के नीचे जा खड़ा हुआ। थोड़ी ही देर में शाहज़ादी भी उठी। उठकर वह खिड़की से बाहर झांकने लगी। अचानक उसकी नज़र नीचे बाग में खड़े हुए अलादीन पर जा पड़ी।

उसने एक दासी को अलादीन के पास भेजा और उसे एक गुप्त दरवाज़े से महल में बुलवा लिया। जब वे दोनों इतने दिनों बाद मिले तो उनकी खुशी की सीमा नहीं रही।

शाहज़ादी उससे मिलकर रोने लगी और बोली, "मुझे यहां से ले चलो। मुझे यहां बहुत डर लगता है। वह जादूगर बड़ा बदमाश है।" फिर अलादीन के पूछने पर शाहज़ादी ने बताया कि किस तरह जादूगर धोखा देकर उससे जादुई दीया ले गया। अब वह जब भी कभी बाहर जाता है तो दीया अपने साथ लेकर जाता है। और यहां भी न मालूम कहां छिपाकर रखता है। अन्त में उसने कहा, "इस समय वह महल में ही है और मुझसे ज़बरदस्ती शादी करना चाहता है। उसने झूठमूठ मुझे बताया कि अलादीन को बादशाह ने मरवा डाला है।"

अलादीन ने जब यह सुना तो उसे बहुत गुस्सा आया। अब उसे यह सोचकर बड़ा पछतावा हो रहा था कि जब मैं जंगल में शिकार खेलने गया था तो दीये को अपने साथ क्यों नहीं लेता गया। लेकिन यह पछताने का मौका नहीं था; उसे जल्दी से जल्दी कोई तरकीब निकालनी थी। उसने शाहज़ादी से कहा, "मैं ज़रा शहर जाना चाहता हूं। दोपहर तक लौटकर मैं तुम्हें बताऊंगा कि आगे हमें क्या करना चाहिए। मैं अपना भेस बदल कर जाऊंगा। लेकिन याद रखना कि उस गुप्त दरवाज़े के पास तुम्हारी कोई विश्वसनीय दासी बराबर खड़ी रहे, ताकि जब मैं आऊं तो वह फौरन मुझे भीतर ले ले।"

अलादीन ने बाज़ार जाकर कुछ सामान खरीदा, जिसमें थोड़ा-सा ज़हर भी था। फिर वह दोपहर तक अपने महल में

लौट आया। शाहज़ादी ने उसे बताया था कि जादूगर आमतौर से रोज़ खाना खाने के बाद जब आराम करता है तब उससे शादी करने को कहता है। यह सुनकर अलादीन ने उसे समझाया, "देखो, आज तुम खूब सज-धजकर और खूब आदर के साथ उसे खाना खिलाना। बातचीत में उसको बताना कि तुम्हें उसकी बात का विश्वास हो गया है कि अलादीन मारा गया है। फिर कहना कि मैं तुमसे शादी करना चाहती हूं। वह तुम्हारी बात से खुश होकर ज़्यादा देर तक महल में बैठा रहेगा। तुम उसे शराब पिलाना और चुपके से उसके प्याले में यह ज़हर छोड़ देना। जब तुम अपना काम पूरा कर लो तो आवाज़ देकर मुझे अन्दर बुला लेना।"

दोपहर को रोज़ की तरह जादूगर शाहज़ादी से मिलने आया। उस दिन शाहज़ादी ने खूब अच्छे कपड़े पहने थे और अपने को खूब सजाया-संवारा था। खाना खाने के बाद जब शाहज़ादी ने उससे कहा कि मुझे तुम्हारी बात विश्वास हो गया है और मैं तुमसे शादी करना चाहती हूं, तो वह खुशी से नाच उठा। फिर शाहज़ादी उसे शराब पिलाने लगी। उसने पहले से उसके प्याले में ज़हर छोड़ रखा था।

शराब का प्याला जादूगर को देकर वह बोली, "लो पहले इसे पी लो, फिर बातें करना!" यह कहकर शाहज़ादी खुद भी शराब पीने लगी। जादूगर ने खुश होकर एक ही घूंट में प्याला खाली कर दिया। लेकिन दूसरे क्षण उसकी आंखें बन्द हो गईं और वह धड़ाम से ज़मीन पर आ गया। ज़मीन पर गिरते ही वह मर गया।

जादूगर के मर जाने पर शाहज़ादी ने अपनी दासियों को भेजकर अलादीन को बुलवाया। अलादीन ने अन्दर आकर शाहज़ादी और उसकी दासियों को कमरे से बाहर निकल जाने को कहा। जब वे सब चली गईं तो वह जादूगर की तलाशी लेने लगा। जादूगर ने उस जादुई चिराग को कसकर अपनी कमर

में बांध रखा था। अलादीन ने उसे फौरन निकाल लिया और उस पर हाथ फेरा। चिराग का दैत्य वहां आ खड़ा हुआ और बोला, "या मेरे आका, हुक्म दो! मैं तुम्हारा गुलाम हूं।"

अलादीन ने उसे हुक्म दिया, "फौरन इस महल को वही पहुंचा दो, जहां से तुम इसे लाए थे।" चिराग का दैत्य उसकी बात अनसुनी नहीं कर सकता था। उसने सिर झुकाकर सलाम किया। उसके जाते ही महल वहां से उड़ने लगा और वापस चीन पहुंच गया। चीन के निवासियों ने उस महल को आसमान में उड़ते हुए देखा तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। पहले जब यह महल उनके देखते-देखते यहां से गायब हो गया था तब भी वे भौंचक्के-से रह गए थे, महल जब फिर से अपनी जगह आ गया तो पूरे शहर के लोग उसे देखने के लिए दौड़े आए।

बादशाह को तो कई दिनों से अपनी बेटी की याद में नींद ही नहीं आ रही थी। उस दिन सवेरे बहुत जल्दी ही वह अपनी खिड़की में जा खड़ा हुआ। जैसे ही उसने खिड़की खोली, उसकी नज़र अपनी शाहज़ादी के महल पर पड़ी। वह उसे देखता ही रहा। उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह फौरन दौड़ा-दौड़ा वहां जा पहुंचा।

यह वही महल था जिसमें शाहज़ादी रहती थी। बादशाह को बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि यह कैसे गायब हुआ और अब कैसे आ गया! वह अपनी बेटी से मिलने गया। जब अलादीन ने सुना कि बादशाह उसके महल में आया है, तो उसने उसका स्वागत किया और उसे सारा किस्सा कह सुनाया।

यह सब सुनकर बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ। खुशी में उसने अपने राज्य में दस दिन की छुट्टी करा दी। देश में इन दिनों नाच-गाना और दावतें चलती रहीं। लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं था। लोग दूर-दूर से शाहज़ादी और अलादीन से मिलने आए और अपने साथ तरह-तरह के तोहफे लाए।

कुछ साल बाद बादशाह की मृत्यु हो गई। बादशाह का कोई लड़का नहीं था। इसलिए शाहज़ादी ही गद्दी पर बैठी। अलादीन की मदद से वह राजकाज चलाने लगी। अब उसके दुःखों का अन्त हो गया। अलादीन अपनी मां को भी महल में ले आया और आराम से रहने लगा।

●●●

मुद्रक : सोहन प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32 48102

किशोरों के लिए साहित्य

ये पुस्तकें विश्वविख्यात उपन्यासों एवं कहानियों के किशोरोपयोगी संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर हैं। इनकी भाषा अत्यन्त सरल और शैली बड़ी रोचक है। बालक बड़े चाव से इन पुस्तकों को पढ़ेंगे।

गुलिवर की यात्राए (Gulliver's Travels)
राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)
खज़ाने की खोज में (Treasure Island)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)
तीसमार खां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
काला फूल (Black Tulip)
कैदी की करामात (The Count of Monte Cristo)
डेविड कापरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ की रानी (Andersen's Fairy Tales)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबीडिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा (20 Thousand Leagues Under the Sea)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
काला घोड़ा (Black Beauty)
साहसी राबिन्सन (Swiss Family Robinson)

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६